



उच्च न्यायालय इलाहाबाद,

लखनऊ

आपराधिक अपील संख्या 255/2005

शंकर एवं 5 अन्य

.....अपीलार्थी(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

अपीलार्थी(गण) के अधिवक्ता: श्रीमती नलिनी जैन, आदर्श मेहरोत्रा, देश रतन मिश्रा, मधु बाला श्रीवास्तव, राजीव कुमार मिश्रा रुद्र, सोनिया मिश्रा, सूर्य बक्स सिंह

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता: शासकीय अधिवक्ता

एवं अन्य सम्बद्ध वाद
न्यायालय संख्या - 10

निर्णय सुरक्षित: 28.11.2025

निर्णय सुनाया गया : 27.02.2026

ए.एफ.आर.

माननीय न्यायमूर्ति रजनीश कुमार,

माननीय न्यायमूर्ति जफ़ीर अहमद,

(द्वारा: रजनीश कुमार, न्यायमूर्ति)

(1) आपराधिक अपील संख्या 255/2005 में अपीलार्थियों के विद्वान न्यायमित्र श्री आदर्श मेहरोत्रा, आपराधिक अपील संख्या 254/2005 में अपीलार्थी के विद्वान न्यायमित्र श्री अमर नाथ दुबे, आपराधिक अपील संख्या 43/2005 में अपीलार्थियों के विद्वान न्यायमित्र श्री श्रीश कुमार मिश्रा अटल, आपराधिक अपील संख्या 231/2005 में अपीलार्थी के विद्वान न्यायमित्र श्री चंद्र शेखर पांडे और राज्य की ओर से विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता श्री पवन कुमार मिश्रा को सुना।

(2) दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (इसके बाद इसे केवल "द.प्र.सं." कहा जाएगा) की धारा 374 (2) के तहत उपर्युक्त सभी आपराधिक अपीलें विद्वान अपर सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश (आवश्यक वस्तु अधिनियम), उन्नाव द्वारा सत्र विचारण संख्या 228 वर्ष 2001 (राज्य बनाम रामपाल एवं 14 अन्य) में पारित साझा निर्णय और आदेश दिनांक 18.12.2004 से उत्पन्न हुई हैं, जो भारतीय दंड संहिता, 1860 (इसके बाद इसे केवल "भा.दं.सं." कहा जाएगा) की धारा 148, 404, 452, 307/149 और 302/149, थाना माखी, जिला उन्नाव के अंतर्गत मुकदमा अपराध संख्या 41 वर्ष 2001 से उद्भूत है।

(3) चूंकि ऊपर नामित आपराधिक अपीलों एक ही साझा तथ्यात्मक घटनाक्रम/घटना, प्रथम सूचना रिपोर्ट और आक्षेपित निर्णय व आदेश दिनांक 18.12.2004 से उत्पन्न हुई हैं, इसलिए इन्हें एक साथ संबद्ध किया जाता है और हम एक साझा निर्णय द्वारा इन्हें तय करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

(4) अभियोजन का मामला संक्षेप में यह है कि दिनांक 12.02.2001 को शिकायतकर्ता गुड्डू ने थाना माखी, जिला उन्नाव में एक लिखित रिपोर्ट (प्रदर्श क-1) प्रस्तुत की थी, जिसमें यह आरोप लगाया गया था कि वह ग्राम मेहरवान खेड़ा, माजरा मेथीटीकुर, थाना माखी, जिला उन्नाव का निवासी है। उसके गांव के गज्जू,

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



राम कुमार, राम किशन और राज कुमार के साले हरि ने करीब 19 वर्ष पहले उसके चाचा किशन की हत्या कर दी थी, जिसमें इन चारों अभियुक्तों को आजीवन कारावास की सजा हुई थी, जिनमें से गज्जू और राम किशन की मृत्यु हो चुकी है। उसके मृत चाचा किशन के बेटों, अनिल और सिद्धा नाथ तथा छोट्टा के बेटों, सूबेदार और राम बली ने वर्ष 1999 में गज्जू की हत्या कर दी थी। इसी पारिवारिक दुश्मनी के कारण कल दिनांक 11.02.2001 को रात करीब 08:00-09:00 बजे अभियुक्त, (1) राम पाल, (2) शंकर, (3) शिव नाथ, (4) मिश्रा, (5) शिव राम पुत्रगण शिव चरण दास, (6) देशा, (7) राम सिंह, (8) बब्बुन, (9) इंद्रपाल पुत्रगण गज्जू, (10) शिव कुमार, (11) मनोज पुत्रगण शंकर, (12) राम प्रकाश, (13) राम कुमार, (14) राम विलास पुत्रगण प्रीतम और (15) मेवा लाल पुत्र हेमराज, जो सभी उसके गांव के और उसकी बिरादरी के हैं, 7-8 बाहरी बदमाशों के साथ, जो छोटी नाल वाली देसी बंदूक, कट्टा, कुल्हाड़ी आदि लिए हुए थे, उसके दरवाजे पर आए और उसके पिता सरजू को गोली मार दी, जो आग ताप रहे थे, जिसके परिणामस्वरूप उसके पिता गिर गए और उनकी मृत्यु हो गई। तब उसका भाई चंद्रिका घर से बाहर निकला और भागा। 6-7 बदमाशों ने उसे उसके गांव के उत्तर-पूर्व दिशा में घूरे पर गोली मारकर गिरा दिया। कुछ बदमाश उसके घर में घुस गए और उसकी भाभी श्रीमती सताना, पत्नी चंद्रिका की हत्या कर दी और जब उसके भाई मंगल ने शोर मचाया, तो उन्होंने उसे भी गोली मार दी। डर के मारे वह (शिकायतकर्ता) घर के अंदर छिप गया और घटना देख रहा था तथा उसने देखा कि बदमाश घर के अंदर टॉर्च जलाकर इधर-उधर देख रहे थे और उन्हें उसका 12 वर्षीय भतीजा अरविंद पुत्र चंद्रिका प्रसाद मिल गया, उन्होंने उस पर भी बंदूक के कुंदों और कुल्हाड़ी से वार किया। इसके बाद सभी बदमाश घर से बाहर आ गए और उसके चचेरे भाई राम खेलावन पुत्र टेकचंद की भी हत्या कर दी। तत्पश्चात, सभी बदमाश हवाई फायरिंग करते हुए और ग्रामीणों को धमकाते हुए फिर से उसके घर में घुसे और उसकी मृत भाभी सताना के गले से सोने की चेन और कान से चांदी के आभूषण छीन लिए तथा वे चार बक्से, चार बेधा वाले बड़े बटुए, चार थालियां, ठर्रा, गिलास और लोटा भी उठा ले गए और सभी बदमाशों ने 25-30 राउंड फायरिंग की तथा इतना आतंक पैदा कर दिया कि कोई भी ग्रामीण घर से बाहर नहीं निकला और सभी ने डर के मारे खिड़कियां और दरवाजे बंद कर लिए। जब बदमाश चले गए, तो वह बाहर आया और देखा कि उसके पिता, भाई मंगल और भाभी सताना मृत थे तथा भतीजा अरविंद बेहोश पड़ा था। जब उसने गांव के उत्तर-पूर्व की ओर देखा, तो पाया कि उसका भाई चंद्रिका घूरे पर मृत पड़ा था। यह सामूहिक हत्याकांड करीब एक घंटे तक चलता रहा, जिसे उसने, उसकी पत्नी पुष्पी, उसकी मां किशाना और राम खेलावन की पत्नी ने देखा तथा कई ग्रामीणों ने गोली की आवाज सुनकर आकर देखा और पहचाना। बदमाशों के डर से कोई भी वहां पास नहीं आया। बक्सों में आभूषण, कपड़े और पैसे रखे थे, जिसके बारे में उसे पूरी जानकारी नहीं है। उन्होंने बाहर से आए 7-8 बदमाशों को उनके चेहरे और हुलिए से पहचाना। घटना के समय घर के अंदर लालटेन और दीपक जल रहे थे और बाहर आग जल रही थी। वह, उसकी पत्नी और उसकी मां उन चीजों को देखने पर पहचान सकते हैं, जिन्हें बदमाश ले गए थे। अपने दोनों भाइयों, भाभी, पिता और चचेरे भाई के शवों को देखकर वह डर गया और बेहोश हो गया। जब उसे होश आया, तो रात के 12 बज चुके थे और उसके साथ जाने के लिए कोई दूसरा व्यक्ति उपलब्ध नहीं था, इसलिए वह थाने नहीं आ सका। तीन शव घर में पड़े हैं और चंद्रिका का शव गांव के बाहर उत्तर-पूर्व में तथा चचेरे भाई राम खेलावन का शव उसके घर में पड़ा है। वह रिपोर्ट करने आया है। रिपोर्ट दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जाए।

(5) उपर्युक्त लिखित रिपोर्ट के आधार पर, दिनांक 12.02.2001 को सुबह 07:00 बजे थाना माखी, जिला उन्नाव में भा.दं.सं. की धारा 147, 148, 149, 452, 302, 307, 404 के तहत मुकदमा अपराध संख्या 41 वर्ष

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



2001 की प्रथम सूचना रिपोर्ट पंजीकृत की गई। मामले की विवेचना थाना प्रभारी श्री लज्जा राम यादव (अभियोजन साक्षी-8), थाना माखी, जिला उन्नाव द्वारा स्वयं अपने हाथ में ली गई।

(6) विवेचक (अभियोजन साक्षी-8) ने चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट की प्रति, रिपोर्ट की प्रति लेने तथा प्रथम सूचना रिपोर्ट के लेखक कांस्टेबल दीना नाथ सिंह (अभियोजन साक्षी-9) और शिकायतकर्ता गुड्डू (अभियोजन साक्षी-2) के बयान दर्ज करने के बाद, घटनास्थल ग्राम मेहरवान के लिए प्रस्थान किया और मृतक राम खेलावन, सरजू, मंगल, श्रीमती सताना, चंद्रिका की पंचायतनामा रिपोर्ट (इनक्वेस्ट रिपोर्ट) तथा उनके शवों के पोस्टमार्टम के उद्देश्य से आवश्यक कागजात प्रदर्श क-12 से प्रदर्श क-34 के रूप में तैयार किए और सीलबंद अवस्था में शवों को कांस्टेबल दददन पांडे (अभियोजन साक्षी-5) और कांस्टेबल राजेश पांडे (अभियोजन साक्षी-4) को सौंप दिया। उन्होंने घटनास्थल से सादी और खून से सनी मिट्टी भी एकत्र की और प्रदर्श क-35 से प्रदर्श क-39 के रूप में फर्द तैयार की। उन्होंने बरामदगी फर्द (प्रदर्श क-40) के तहत घटनास्थल से बंदूक के कुंदों की टूटी हुई लकड़ी और बंदूक का आर्क बरामद किया। उन्होंने बरामदगी फर्द प्रदर्श क-41 के तहत 12 बोर के 13 खाली कारतूस, 315 बोर का एक खाली कारतूस और 315 बोर का एक बुलेट भी बरामद किया। शिकायतकर्ता के बताने पर उन्होंने घटनास्थल का निरीक्षण किया और प्रदर्श क-42 के रूप में नजरी नक्शा तैयार किया। दिनांक 12/13.02.2001 की मध्यवर्ती रात लगभग 11:00 बजे, उन्होंने नामजद अभियुक्त राम कुमार, राम विलास और मेवालाल को गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने अभियुक्त राम कुमार के कब्जे से 315 बोर का एक कट्टा और दो कारतूस; अभियुक्त मेवा लाल के कब्जे से 12 बोर का एक कट्टा और 12 बोर के दो कारतूस; तथा अभियुक्त राम विलास के कब्जे से खून से सनी एक कुल्हाड़ी बरामदगी फर्द प्रदर्श क-43 के तहत बरामद की। दिनांक 14.02.2001 को उन्होंने अभियुक्त शिवराम, शिव कुमार और शिवनाथ को गिरफ्तार किया और अभियुक्त शिवराम के कब्जे से 12 बोर का एक कट्टा और दो कारतूस बरामद किए तथा अभियुक्त शिव कुमार और शिव नाथ की निशानदेही पर कुल्हाड़ियां बरामद कीं। दिनांक 19.02.2001 को उन्होंने अभियुक्त राम सिंह और बब्बुन को गिरफ्तार किया और उनकी निशानदेही पर कुल्हाड़ी और लाठी बरामद की। दिनांक 20.02.2001 को उन्होंने अभियुक्त शंकर का जेल में बयान दर्ज किया, क्योंकि अभियुक्त शंकर ने न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया था। दिनांक 21.02.2001 को मुखबिर से सूचना मिलने पर उन्होंने अभियुक्त देशराज, इंद्रपाल और मिश्री लाल को गिरफ्तार किया और अभियुक्त देशराज की निशानदेही पर 12 बोर का एक कट्टा, दो कारतूस तथा अभियुक्त इंद्रपाल की निशानदेही पर एक कट्टा और दो कारतूस तथा अभियुक्त मिश्रीलाल की निशानदेही पर एक कट्टा और 12 बोर का एक कारतूस बरामदगी फर्द के तहत बरामद किया। दिनांक 23.02.2001 को उन्होंने अभियुक्त मनोज को गिरफ्तार किया और उसके कब्जे से छल्ले वाली एक लाठी बरामद की। दिनांक 03.03.2001 को उन्होंने अभियुक्त पप्पू को गिरफ्तार किया और उसके कब्जे से एक कट्टा और 12 बोर का एक कारतूस बरामद किया तथा उसकी कमीज की बाईं जेब से बरामदगी फर्द के तहत चांदी की झाला-झुमकी की एक जोड़ी (घंटी के आकार के लटकने वाले झुमके) बरामद की।

(7) मृतक राम खेलावन के शव का पोस्टमार्टम डॉ. विनय प्रकाश (अभियोजन साक्षी-7) द्वारा दिनांक 12.02.2001 को रात लगभग 08:10 बजे किया गया था। डॉक्टर ने मृतक की उम्र करीब 45 वर्ष पाई और मृत्यु का संभावित समय 11.02.2001 को रात 08:00-09:00 बजे के बीच था। मृतक औसत काठी और कद का था। आंखें और मुंह बंद थे तथा ऊपरी व निचले अंगों में कड़ापन (राइगर मॉर्टिस) मौजूद था। उन्हें मृतक राम खेलावन के शरीर पर निम्नलिखित मृत्यु-पूर्व चोटें मिलीं:-

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



1. बाईं आंख के भौंह से 3 सेमी ऊपर बाईं ओर माथे पर 3.5 सेमी x 1 सेमी आकार का कटा हुआ घाव जो हड्डी तक गहरा था। खोपड़ी की हड्डी कटी-फटी थी।

2. बाएं कान से 8 सेमी ऊपर बाएं पार्श्व भाग पर 4 सेमी x 3 सेमी आकार का कटा हुआ घाव जो हड्डी तक गहरा था। खोपड़ी की हड्डी कटी-फटी थी।

3. ओसीपिटल के मध्य में नीचे 5 सेमी पर ओसीपिटल भाग पर 8 सेमी x 2 सेमी आकार का कटा हुआ घाव, जिससे मस्तिष्क का पदार्थ बाहर आ रहा था, घाव हड्डी तक गहरा था। खोपड़ी की हड्डी कटी-फटी थी।

आंतरिक परीक्षण पर, डॉ. विनय प्रकाश ने पाया कि खोपड़ी की हड्डियां टूटी हुई थीं; मस्तिष्क की झिल्लियां भी फटी हुई थीं; खोपड़ी की गुहा के अंदर लगभग 100 ग्राम रक्त पाया गया था; और आमाशय में लगभग 150 ग्राम अर्ध-पचित भोजन था।

डॉ. विनय प्रकाश के मत के अनुसार, मृत्यु का कारण सिर की मृत्यु-पूर्व चोटों के परिणामस्वरूप लगा सदमा और अत्यधिक रक्तस्राव था। मृत्यु-पूर्व चोटें कुल्हाड़ी जैसे धारदार हथियार से पहुंचाई जा सकती हैं।

(8) मृतक सरजू के शव का पोस्टमार्टम डॉ. विनय प्रकाश (अभियोजन साक्षी-7) द्वारा दिनांक 12.02.2021 को रात लगभग 08:25 बजे किया गया था। डॉक्टर ने मृतक सरजू की उम्र करीब 60 वर्ष पाई और मृत्यु का संभावित समय 11.02.2001 को रात 08:00-09:00 बजे के बीच था। मृतक औसत काठी और कद का था। आंखें बंद थीं और मुंह खुला था तथा ऊपरी व निचले अंगों में कड़ापन मौजूद था। उन्हें मृतक सरजू के शरीर पर निम्नलिखित मृत्यु-पूर्व चोटें मिलीं:-

1. बाएं शंख भाग पर 8 सेमी x 1 सेमी आकार का कटा हुआ घाव, जो हड्डी तक गहरा था।

2. छाती के बाईं ओर, बाएं चूचुक (निप्पल) से 3 सेमी पार्श्व में 4 बजे की स्थिति पर 1.5 सेमी x 1.5 सेमी आकार का आग्नेयास्त्र प्रवेश घाव, जो गुहा तक गहरा था, यह पीछे और मध्य की ओर जाता है। किनारे अंदर की ओर मुड़े हुए थे, कालापन मौजूद था और पीठ पर, कंधे की हड्डी के निचले कोण के स्तर पर रीढ़ की हड्डी से 3 सेमी पार्श्व में 3 सेमी x 2.5 सेमी आकार का निकास घाव था। किनारे बाहर की ओर मुड़े हुए थे।

आंतरिक परीक्षण पर, डॉ. विनय प्रकाश ने पाया कि बायां फेफड़ा फटा हुआ था; हृदय की झिल्लियां फटी हुई थीं; छाती की गुहा के अंदर लगभग 1.5 लीटर रक्त मौजूद था; और आमाशय में लगभग 100 ग्राम अर्ध-पचित भोजन था।

डॉ. विनय प्रकाश के मत के अनुसार, मृत्यु का कारण मृत्यु-पूर्व चोटों के परिणामस्वरूप लगा सदमा और अत्यधिक रक्तस्राव था। मृत्यु-पूर्व चोट संख्या 1 कुल्हाड़ी आदि जैसे धारदार हथियार से पहुंचाई जा सकती है और चोट संख्या 2 कट्टा, देसी बंदूक जैसे आग्नेयास्त्र से पहुंचाई जा सकती है।

(9) मृतक मंगल के शव का पोस्टमार्टम डॉ. विनय प्रकाश (अभियोजन साक्षी-7) द्वारा दिनांक 12.02.2021 को रात लगभग 08:50 बजे किया गया था। डॉक्टर ने मृतक मंगल की उम्र करीब 35 वर्ष पाई और मृत्यु का संभावित समय 11.02.2001 को रात 08:00-09:00 बजे के बीच था। मृतक औसत काठी और

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



कद का था। आंखें खुली थीं और मुंह बंद था तथा ऊपरी व निचले अंगों में कड़ापन मौजूद था। उन्हें मृतक मंगल के शरीर पर निम्नलिखित मृत्यु-पूर्व चोटें मिलीं:-

1. छाती के बाईं ओर, बाएं चूचुक से 9 सेमी पार्श्व में 4 बजे की स्थिति पर 3 सेमी x 2.5 सेमी आकार का आग्नेयास्त्र प्रवेश घाव, जो चारों ओर से लगभग एक सेमी के कई छर्रों के प्रवेश घावों से घिरा हुआ था, जो गुहा तक गहरा था। घाव की दिशा मध्य में और दाईं ओर थी जो बाएं फेफड़े, हृदय और दाएं फेफड़े को पार कर रही थी।

2. बाएं कान से 13 सेमी ऊपर ओसीपिटल भाग पर 2 सेमी x 1 सेमी आकार का कटा हुआ घाव, जो हड्डी तक गहरा था।

आंतरिक परीक्षण पर, डॉ. विनय प्रकाश ने पाया कि बायां फेफड़ा फटा हुआ था; हृदय की झिल्लियां फटी हुई थीं; छाती की गुहा में लगभग 1.5 लीटर रक्त मौजूद था; और आमाशय में लगभग 100 ग्राम आंशिक रूप से अर्ध-पचित भोजन था।

डॉ. विनय प्रकाश के मत के अनुसार, मृत्यु का कारण मृत्यु-पूर्व आग्नेयास्त्र की चोटों के परिणामस्वरूप लगा सदमा और अत्यधिक रक्तस्राव था। मृत्यु-पूर्व चोट संख्या 1 देसी बंदूक या कट्टे जैसे आग्नेयास्त्र से पहुंचाई जा सकती है और चोट संख्या 2 कुल्हाड़ी आदि जैसे धारदार हथियार से पहुंचाई जा सकती है।

(10) मृतक श्रीमती सताना के शव का पोस्टमार्टम डॉ. विनय प्रकाश (अभियोजन साक्षी-7) द्वारा दिनांक 12.02.2021 को रात लगभग 09:15 बजे किया गया था। डॉक्टर ने मृतक श्रीमती सताना की उम्र करीब 35 वर्ष पाई और मृत्यु का संभावित समय 11.02.2001 को रात 08:00-09:00 बजे के बीच था। मृतक औसत काठी और कद का था। मुंह और आंखें खुली थीं तथा ऊपरी व निचले अंगों में कड़ापन मौजूद था। उन्हें मृतक श्रीमती सताना के शरीर पर निम्नलिखित मृत्यु-पूर्व चोटें मिलीं:-

1. गर्दन के जोड़ों पर बाईं ओर श्वासनली (ट्रैकिया) के पार्श्व में 5 सेमी x 3 सेमी आकार का आग्नेयास्त्र प्रवेश घाव, कालापन और गोदना (टैटूइंग) मौजूद था। किनारे अंदर की ओर मुड़े हुए थे, घाव की दिशा नीचे की ओर तथा दाईं ओर और छाती की गुहा तक गहरी थी, बाईं और दाईं जत्रुक (क्लैविकल) का मध्य सिरा टूटा हुआ था, गर्दन की रक्तवाहिकाएं क्षतिग्रस्त थीं।

2. बाएं उदर भाग (अम्बर रीजन) पर पार्श्व भाग में इलियाक क्रेस्ट से 3 सेमी ऊपर 6 सेमी x 4 सेमी आकार का आग्नेयास्त्र प्रवेश घाव। कालापन और गोदना मौजूद था, किनारे अंदर की ओर मुड़े हुए थे, गुहा तक गहरा था, मध्य में और दाईं ओर जाता था। घाव से छोटी आंत बाहर आ रही थी।

3. बाएं घुटने के जोड़ (कैप) पर 8 सेमी x 7 सेमी आकार की खरोंच (एब्रेजन)।

आंतरिक परीक्षण पर, डॉ. विनय प्रकाश ने पाया कि दायां फेफड़ा फटा हुआ था; छाती की गुहा के अंदर एक डाट का टुकड़ा (वैडिंग पीस) और दस छोटे छर्रों के साथ लगभग 750 मिलीलीटर रक्त मौजूद था; और

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



आमाशय में दो डाट के टुकड़े और 12 छोटे छरों के साथ लगभग 150 grams रक्त तथा 100 grams पचा हुआ भोजन था; बड़ी आंत का दायां हिस्सा भरा हुआ था; और प्लीहा (स्प्लीन) तथा बायां गुर्दा फटे हुए थे।

डॉ. विनय प्रकाश के मत के अनुसार, मृत्यु का कारण मृत्यु-पूर्व आग्नेयास्त्र की चोटों के परिणामस्वरूप लगा सदमा और अत्यधिक रक्तस्राव था। मृत्यु-पूर्व चोट संख्या 1 और 2 देसी बंदूक या कट्टे जैसे आग्नेयास्त्र से पहुंचाई जा सकती हैं और चोट संख्या 3 गिरने के कारण लग सकती थी।

(11) मृतक चंद्रिका के शव का पोस्टमार्टम डॉ. विनय प्रकाश (अभियोजन साक्षी-7) द्वारा दिनांक 12.02.2021 को रात लगभग 09:45 बजे किया गया था। डॉक्टर ने मृतक चंद्रिका की उम्र करीब 40 वर्ष पाई और मृत्यु का संभावित समय 11.02.2001 को रात 08:00-09:00 बजे के बीच था। मृतक औसत काठी और कद का था। मुंह आधा खुला था और आंखें बंद थीं तथा ऊपरी व निचले अंगों में कड़ापन मौजूद था। उन्हें मृतक चंद्रिका के शरीर पर निम्नलिखित मृत्यु-पूर्व चोटें मिलीं:-

1. खोपड़ी के दाएं पार्श्व भाग (पैरिएटल रीजन) पर कान के पीछे तिरछी स्थिति में 15 सेमी x 1.5 सेमी आकार का कटा हुआ घाव, खोपड़ी की हड्डियां कटी हुई थीं और बहुत बुरी तरह से क्षत-विक्षत थीं, दाएं कान के 5 सेमी पीछे से मस्तिष्क का पदार्थ बाहर आ रहा था।
2. बाएं शंख भाग पर बाएं कान के पीछे 5 सेमी पर 7 सेमी x 12 सेमी आकार का कटा हुआ घाव, खोपड़ी की हड्डी बुरी तरह क्षत-विक्षत थी और मस्तिष्क का पदार्थ बाहर आ रहा था।
3. छाती के बाईं ओर, बाएं निप्पल से 3 सेमी नीचे 2 सेमी x 1 सेमी आकार की खरोंच।

आंतरिक परीक्षण पर, डॉ. विनय प्रकाश ने पाया कि खोपड़ी की हड्डियां टूटी हुई थीं; मस्तिष्क की झिल्लियां और मस्तिष्क पूरी तरह से क्षत-विक्षत थे और आमाशय में 150 ग्राम पचा हुआ भोजन पाया गया था।

डॉ. विनय प्रकाश के मत के अनुसार, मृत्यु का कारण सिर की मृत्यु-पूर्व चोटों के परिणामस्वरूप लगा सदमा और अत्यधिक रक्तस्राव था। मृत्यु-पूर्व चोट संख्या 1 और 2 कुल्हाड़ी जैसे धारदार हथियार से पहुंचाई जा सकती हैं और चोट संख्या 3 गिरने के कारण लग सकती थी।

(12) घायल अरविंद की चोटों का परीक्षण डॉ. सत्य प्रकाश (अभियोजन साक्षी-16) द्वारा जिला अस्पताल, उन्नाव में दिनांक 12.02.2021 को सुबह 09:00 बजे किया गया था। डॉक्टर ने घायल की उम्र करीब 13 वर्ष पाई और चोटों का संभावित समय लगभग आधा दिन पुराना था। उन्हें घायल अरविंद के शरीर पर निम्नलिखित चोटें मिलीं:-

1. खोपड़ी के पीछे और बाएं कान के पीछे विभिन्न आकारों के कई कटे-फटे घाव, जो हड्डी तक गहरे थे।
2. खोपड़ी के शीर्ष पर मध्य में 7 सेमी x 1 सेमी का कटा हुआ घाव।

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



3. चेहरे के बाईं ओर 2 सेमी x ½ सेमी x मांसपेशियों तक गहरा कटा-फटा घाव।

4. चेहरे के दाईं ओर कई नील (गुमचोट)।”

डॉ. सत्य प्रकाश (अभियोजन साक्षी-16) के अनुसार, चोट संख्या 1, 2 और 4 को निगरानी में रखा गया था और एक्स-रे की सलाह दी गई थी। चोट संख्या 2 धारदार हथियार से लग सकती थी और अन्य चोटें किसी कुंद वस्तु से लग सकती थीं। मुख्य परीक्षा में उन्होंने बयान दिया कि चोट संख्या 1, 3 और 4 बंदूक के कुंदों से पहुंचाई जा सकती हैं और चोट संख्या 2 कुल्हाड़ी से पहुंचाई जा सकती है तथा ये चोटें 11.02.2001 को रात 8:00-09:00 बजे के बीच लग सकती थीं। प्रतिपरीक्षा में अभियोजन साक्षी-16 ने बयान दिया है कि चोट संख्या 1, 3 और 4 लाठी और डंडे से लग सकती थीं तथा चोट संख्या 2 धारदार हथियार से लग सकती थी।

(13) दिनांक 14.04.2001 को विवेचक लज्जा राम यादव (अभियोजन साक्षी-8) का स्थानांतरण हो गया और उसके बाद, थाना प्रभारी कुमारी ममता विद्यार्थी (अभियोजन साक्षी-10) ने मामले की आगे की विवेचना संभाली, जिन्होंने गवाहों के बयान दर्ज करने सहित आवश्यक औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद, अभियुक्तों से बरामद किए गए हमले के हथियारों को परीक्षण के लिए दिनांक 08.05.2001 को विधि विज्ञान प्रयोगशाला भेजा। दिनांक 09.05.2001 को विवेचना पूरी करने के बाद, उन्होंने अभियुक्त (1) राम पाल, (2) शंकर, (3) शिव नाथ, (4) मिश्रा उर्फ मिश्री लाल, (5) शिव राम, (6) देशा उर्फ देशराज, (7) Ram सिंह, (8) बब्बुन, (9) इंद्रपाल, (10) शिव कुमार, (11) मनोज, (12) राम प्रकाश, (13) राम कुमार, (14) राम विलास, (15) मेवा लाल, (16) पप्पू, (17) कुंजू, (18) मंसा राम और (19) छोटा रैदास के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 147, 148, 149, 452, 302, 307, 404, 411 के तहत आरोप पत्र (प्रदर्श क-66) प्रस्तुत किया, जिसमें से अभियुक्त संख्या (7) राम सिंह, (8) बब्बुन, (9) इंद्रपाल और (11) मनोज को किशोर घोषित किया गया था, इसलिए उनके मामलों को किशोर न्याय बोर्ड को अग्रेषित कर दिया गया था। आदेश दिनांक 21.06.2002 में, विद्वान मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, उन्नाव ने संज्ञान लिया कि अभियुक्त मंसा राम न्यायालय में उपस्थित हुआ, लेकिन अभियुक्त छोटा रैदास फरार था, इसलिए अभियुक्त छोटा रैदास के विरुद्ध दर्ज वाद को अलग कर दिया गया था।

(14) विद्वान मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने उपरोक्त आरोप पत्र पर संज्ञान लिया और आदेश दिनांक 21.06.2002 के माध्यम से अभियुक्त राम पाल, शंकर, शिवनाथ, मिश्री लाल, शिव राम, देश राज, राम सिंह, बब्बुन, इंद्रपाल, शिव कुमार, मनोज, राम प्रकाश, रामकुमार, राम विलास, मेवा लाल, पप्पू, कुंजी के विरुद्ध वाद को सत्र न्यायालय के सुपुर्द कर दिया, जहां वाद को सत्र विचारण संख्या 228 वर्ष 2001 : राज्य बनाम राम पाल एवं अन्य के रूप में पंजीकृत किया गया।

(15) विद्वान सत्र न्यायाधीश, उन्नाव ने आदेश दिनांक 28.08.2001 के माध्यम से पंद्रह अभियुक्तों के विरुद्ध आरोप विरचित किए, हालांकि बाद में, आदेश दिनांक 05.10.2001 के माध्यम से विद्वान सत्र न्यायाधीश ने अभियुक्त राम सिंह का मामला किशोर न्याय बोर्ड को संदर्भित कर दिया। तदनुसार, चौदह अभियुक्तों, अर्थात् राम पाल, शिव नाथ, शंकर, मिश्रा उर्फ मिश्री लाल, शिव राम, देशा उर्फ देश राज, शिव

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



कुमार, राम प्रकाश, राम कुमार, राम विलास, मेवा लाल, पप्पू, कुंजी और मंसा राम का विद्वान सत्र न्यायाधीश द्वारा सत्र विचारण संख्या 228 वर्ष 2001 में विचारण किया गया है। उपरोक्त सभी चौदह अभियुक्तों ने अपने आरोपों से इनकार किया और विचारण की मांग की।

(16) उपरोक्त वाद के अलावा, आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत भी वाद पंजीकृत किए गए थे और उन्हें उपरोक्त वाद के साथ संबद्ध किया गया था तथा उपरोक्त अभियुक्तों के विरुद्ध एक साथ विचारण किया गया था।

(17) अपने मामले को साबित करने के लिए, अभियोजन पक्ष ने सोलह गवाहों का परीक्षण किया, जो इस प्रकार हैं:-

अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगाना	मृतक राम खेलावन की पत्नी
अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू	मृतक सरजू/शिकायतकर्ता का बेटा
अभियोजन साक्षी-3-अरविंद	घायल
अभियोजन साक्षी-4-कांस्टेबल राजेश पांडे अभियोजन साक्षी-5-दददन पांडे	मृतक व्यक्तियों के सीलबंद शवों को पोस्टमार्टम के लिए लाए
अभियोजन साक्षी-6-कांस्टेबल भगवान दीन	विवेचक लज्जाराम यादव द्वारा तैयार किए गए बरामदगी मेमो के आधार पर चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट तैयार की
अभियोजन साक्षी-7-डॉ. विनय प्रकाश	मृतकों के शवों का पोस्टमार्टम किया
अभियोजन साक्षी-8-लज्जा राम यादव	प्रथम विवेचक
अभियोजन साक्षी-9-कांस्टेबल दीनानाथ सिंह	शिकायतकर्ता की लिखित रिपोर्ट के आधार पर चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट तैयार की
अभियोजन साक्षी-10-थाना प्रभारी कुमारी ममता विद्यार्थी	द्वितीय विवेचक, जिन्होंने अभियुक्तों के विरुद्ध आरोप पत्र दाखिल किया
अभियोजन साक्षी-11-आर.डी. सिंह	अभियुक्त राम प्रकाश के विरुद्ध आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत मुकदमा अपराध

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



	संख्या 68 वर्ष 2001 (सत्र विचारण संख्या 234 वर्ष 2001) की विवेचना की
अभियोजन साक्षी-12-कांस्टेबल राम सिंह	विवेचक लज्जाराम यादव के बरामदगी मेमो के आधार पर चिक रिपोर्ट संख्या क4/1 तैयार की
अभियोजन साक्षी-13-कांस्टेबल दीनानाथ सिंह	विवेचक लज्जाराम यादव के बरामदगी मेमो के आधार पर आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत मुकदमा अपराध संख्या 48, 49 और 50 वर्ष 2001 पंजीकृत किया
अभियोजन साक्षी-14-उपनिरीक्षक सोनेलाल	आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत मुकदमा अपराध संख्या 42 और 43 वर्ष 2001 के विवेचक
अभियोजन साक्षी-15-उपनिरीक्षक जनार्दन प्रसाद दुबे	अभियुक्त पप्पू के विरुद्ध आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत मुकदमा अपराध संख्या 58 वर्ष 2001 पंजीकृत किया
अभियोजन साक्षी-16-डॉ. सत्य प्रकाश	घायल अरविंद की चोटों का परीक्षण किया

(18) उपर्युक्त गवाहों के अलावा, प्रासंगिक दस्तावेज भी अभिलेख पर रखे गए हैं और अभियोजन पक्ष द्वारा साबित किए गए हैं, जो इस प्रकार हैं:-

प्रदर्श क-1	लिखित रिपोर्ट
प्रदर्श क-2	मुकदमा अपराध संख्या 42/2001 की चिक प्राथमिकी
प्रदर्श क-3	जी.डी. की कार्बन प्रति
प्रदर्श क-4	मुकदमा अपराध संख्या 44/2001 की चिक प्राथमिकी मृतक राम खेलावन की पोस्टमार्टम रिपोर्ट
प्रदर्श क-5	
प्रदर्श क-6	मृतक सरजू की पोस्टमार्टम रिपोर्ट

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



प्रदर्श क-7	मृतक मंगल की पोस्टमार्टम रिपोर्ट
प्रदर्श क-8	मृतक श्रीमती सताना की पोस्टमार्टम रिपोर्ट
प्रदर्श क-9	मृतक चंद्रिका की पोस्टमार्टम रिपोर्ट
प्रदर्श क-10	मृतक राम खेलावन की पंचायतनामा रिपोर्ट
प्रदर्श क-11	मृतक सरजू की पंचायतनामा रिपोर्ट
प्रदर्श क-12	मृतक मंगल की पंचायतनामा रिपोर्ट
प्रदर्श क-13	मृतक सताना की पंचायतनामा रिपोर्ट
प्रदर्श क-14	मृतक चंद्रिका की पंचायतनामा रिपोर्ट
प्रदर्श क-15	आरक्षी निरीक्षक पुलिस लाइन्स, उन्नाव को प्रेषित पत्र, जिसमें मृतक व्यक्तियों के पोस्टमार्टम हेतु अनुमति मांगी गई है
प्रदर्श क-16	मुख्य चिकित्सा अधिकारी, उन्नाव को प्रेषित पत्र, मृतक राम खेलावन का पोस्टमार्टम कराने हेतु
प्रदर्श क-17	पुलिस प्रपत्र संख्या 33
प्रदर्श क-18	मृतक राम खेलावन की फोटो लाश
प्रदर्श क-19	मुख्य चिकित्सा अधिकारी को प्रेषित पत्र, मृतक सरजू का पोस्टमार्टम कराने हेतु
प्रदर्श क-20	आरक्षी निरीक्षक, पुलिस लाइन्स उन्नाव को प्रेषित पत्र, पोस्टमार्टम हेतु अनुमति मांगी गई है
प्रदर्श क-21	मृतक सरजू की फोटो लाश

प्रदर्श क-22	मृतक सरजू का पुलिस प्रपत्र संख्या 33
प्रदर्श क- 23	आरक्षी निरीक्षक, पुलिस लाइन्स, उन्नाव को प्रेषित पत्र, मृतक मंगल के पोस्टमार्टम हेतु अनुमति मांगी गई है

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



प्रदर्श क- 24	मुख्य चिकित्सा अधिकारी, उन्नाव को प्रेषित पत्र, मृतक मंगल के पोस्टमार्टम हेतु
प्रदर्श क- 25	मृतक मंगल का पुलिस प्रपत्र संख्या 33
प्रदर्श क-26	मृतक मंगल की फोटो लाश
प्रदर्श क- 27	मुख्य चिकित्सा अधिकारी, उन्नाव को प्रेषित पत्र, मृतक श्रीमती सताना के पोस्टमार्टम हेतु
प्रदर्श क- 28	आरक्षी निरीक्षक, पुलिस लाइन्स, उन्नाव को प्रेषित पत्र, मृतक श्रीमती सताना के पोस्टमार्टम हेतु अनुमति मांगी गई है
प्रदर्श क- 29	मृतक श्रीमती सताना की फोटो लाश
प्रदर्श क- 30	पुलिस प्रपत्र संख्या 33
प्रदर्श क- 31	मुख्य चिकित्सा अधिकारी, उन्नाव को प्रेषित पत्र, मृतक चंद्रिका के पोस्टमार्टम हेतु
प्रदर्श क- 32	आरक्षी निरीक्षक को प्रेषित पत्र, मृतक चंद्रिका के पोस्टमार्टम हेतु अनुमति मांगी गई है
प्रदर्श क- 33	मृतक चंद्रिका का पुलिस प्रपत्र संख्या 33
प्रदर्श क-34	मृतक चंद्रिका की लाश का फोटो
प्रदर्श क-35, प्रदर्श क-36, प्रदर्श क-37, प्रदर्श क-38, प्रदर्श क-39	उस स्थान से एकत्र की गई खून से सनी मिट्टी और सादी मिट्टी के बरामदगी मेमो जहां मृतक राम खेलावन, सरजू, चंद्रिका, श्रीमती सताना, मंगल के शव पड़े थे
प्रदर्श क-40	बंदूक के कुंदों की टूटी हुई लकड़ी का बरामदगी मेमो

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



प्रदर्श क-41	12 बोर के 13 खाली कारतूसों, 315 बोर के एक खाली कारतूस और 315 बोर की एक गोली का बरामदगी मेमो
प्रदर्श क-42	नजरी नक्शा
प्रदर्श क-43	अभियुक्तों से हमले के हथियार यानी दो कट्टे, कारतूस और कुल्हाड़ी का बरामदगी मेमो
प्रदर्श क-44	खून से सनी कुल्हाड़ी का बरामदगी मेमो
प्रदर्श क-45	एक कट्टे का बरामदगी मेमो

प्रदर्श क-46	12 बोर के एक कट्टे, 12 बोर के दो कारतूसों का बरामदगी मेमो और अभियुक्तों का गिरफ्तारी मेमो
प्रदर्श क-47	एक कट्टे और कारतूसों का बरामदगी मेमो
प्रदर्श क-48	315 बोर की एक देसी बंदूक और कारतूसों का बरामदगी मेमो तथा अभियुक्तों का गिरफ्तारी मेमो
प्रदर्श क-49	12 बोर के एक कट्टे और कारतूसों का बरामदगी मेमो
प्रदर्श क-50	हमले के हथियार की बरामदगी का नजरी नक्शा
प्रदर्श क-51	प्रथम सूचना रिपोर्ट, मुकदमा अपराध संख्या 41 वर्ष 2001
प्रदर्श क-52	सामान्य डायरी की कार्बन प्रति
प्रदर्श क-53	रिपोर्ट संख्या 10 की प्रति
प्रदर्श क-54 से प्रदर्श क-65	रासायनिक परीक्षण के लिए भेजने वाला प्रपत्र

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



प्रदर्श क-66, प्रदर्श क-67	मुकदमा अपराध संख्या 41 वर्ष 2001 में आरोप पत्र
प्रदर्श क-68	मुकदमा अपराध संख्या 68 वर्ष 2001 में अभियुक्त की गिरफ्तारी का नजरी नक्शा
प्रदर्श क-69	मुकदमा अपराध संख्या 68 वर्ष 2001 में आयुध अधिनियम की धारा 3/25 के तहत अभियुक्त के विरुद्ध कार्यवाही शुरू करने के लिए जिला मजिस्ट्रेट, उन्नाव द्वारा स्वीकृति
प्रदर्श क-70	मुकदमा अपराध संख्या 68 वर्ष 2001 में आरोप पत्र
प्रदर्श क-71	मुकदमा अपराध संख्या 81 वर्ष 2001 में चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट
प्रदर्श क-72	सामान्य डायरी की कार्बन प्रति
प्रदर्श क-73	मुकदमा अपराध संख्या 81 वर्ष 2001 में अभियुक्त की गिरफ्तारी का नजरी नक्शा
प्रदर्श क-74	मुकदमा अपराध संख्या 81 वर्ष 2001 में आरोप पत्र
प्रदर्श क-75	मुकदमा अपराध संख्या 59 वर्ष 2001 में चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट
प्रदर्श क-76	मुकदमा अपराध संख्या 59 वर्ष 2001 में सामान्य डायरी की कार्बन प्रति
प्रदर्श क-77	मुकदमा अपराध संख्या 59 वर्ष 2001 में अभियुक्त की गिरफ्तारी का नजरी नक्शा
प्रदर्श क-78	मुकदमा अपराध संख्या 59 वर्ष 2001 में आरोप पत्र

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



प्रदर्श क-79	चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट, मुकदमा अपराध संख्या 48 वर्ष 2001
प्रदर्श क-80	सामान्य डायरी की कार्बन प्रति
प्रदर्श क-81	मुकदमा अपराध संख्या 48 वर्ष 2001 में आरोप पत्र
प्रदर्श क-82, 83, 84	मुकदमा अपराध संख्या 48 वर्ष 2001 में अभियुक्त की गिरफ्तारी का नजरी नक्शा
प्रदर्श क-85	मुकदमा अपराध संख्या 42 वर्ष 2001 में आरोप पत्र
प्रदर्श क-86	मुकदमा अपराध संख्या 43 वर्ष 2001 में आरोप पत्र
प्रदर्श क-87, प्रदर्श क-88	मुकदमा अपराध संख्या 42 वर्ष 2001, 43 वर्ष 2001 के अभियुक्तों के विरुद्ध आयुध अधिनियम की धारा 3/25 के तहत कार्यवाही शुरू करने का जिला मजिस्ट्रेट उन्नाव का आदेश
प्रदर्श क-89	चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट, मुकदमा अपराध संख्या 38 वर्ष 2001
प्रदर्श क-90	मुकदमा अपराध संख्या 38 वर्ष 2001 में सामान्य डायरी की कार्बन प्रति
प्रदर्श क-91	मुकदमा अपराध संख्या 45 वर्ष 2001 में चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट
प्रदर्श क-92	सामान्य डायरी की कार्बन प्रति
प्रदर्श क-93	मुकदमा अपराध संख्या 59 वर्ष 2001 के अभियुक्त के विरुद्ध आयुध अधिनियम की धारा 3/25 के तहत कार्यवाही शुरू करने का जिला मजिस्ट्रेट का आदेश
प्रदर्श क-94	मुकदमा अपराध संख्या 44 वर्ष 2001 में आरोप पत्र

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



प्रदर्श क-95	मुकदमा अपराध संख्या 44 वर्ष 2001 के अभियुक्त के विरुद्ध आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत कार्यवाही शुरू करने का जिला मजिस्ट्रेट का आदेश
प्रदर्श क-96	सामान्य डायरी की कार्बन प्रति
प्रदर्श क-97	मुकदमा अपराध संख्या 44 वर्ष 2001 में नजरी नक्शा
प्रदर्श क-98	मुकदमा अपराध संख्या 81 वर्ष 2001 के अभियुक्त के विरुद्ध आयुध अधिनियम की धारा 3/25 के तहत कार्यवाही शुरू करने का जिला मजिस्ट्रेट का आदेश
प्रदर्श क-99	मुकदमा अपराध संख्या 50 वर्ष 2001 में आरोप पत्र
प्रदर्श क-100	मुकदमा अपराध संख्या 50 वर्ष 2001 के अभियुक्त के विरुद्ध आयुध अधिनियम की धारा 3/24 के तहत कार्यवाही शुरू करने का जिला मजिस्ट्रेट, उन्नाव का आदेश

प्रदर्श क-101	मुकदमा अपराध संख्या 51 वर्ष 2001 में अभियुक्त की गिरफ्तारी का नजरी नक्शा
प्रदर्श क-102	मुकदमा अपराध संख्या 48 वर्ष 2001 में आरोप पत्र
प्रदर्श क-103	मुकदमा अपराध संख्या 48 वर्ष 2001 के अभियुक्त के विरुद्ध आयुध अधिनियम की धारा 3/25 के तहत कार्यवाही शुरू करने का जिला मजिस्ट्रेट का आदेश
प्रदर्श क-104	मुकदमा अपराध संख्या 48 वर्ष 2001 में नजरी नक्शा
प्रदर्श क-106	घायल अरविंद की चोटें

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



कागज संख्या 133क/1 से 133क/5	विधि विज्ञान प्रयोगशाला रिपोर्ट कागज संख्या 133क/1 से 133क/5 के रूप में
------------------------------	---

(19) अभियोजन के साक्ष्य के पूरा होने के बाद, अभियुक्त व्यक्तियों के बयान दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत दर्ज किए गए थे, जिसमें उन्होंने घटना से इनकार किया और साक्ष्य से सामने आई कई बातों के प्रति अनभिज्ञता जताई तथा कहा कि पुलिस ने उनके खिलाफ झूठा वाद दर्ज किया है और दुश्मनी के आधार पर साक्ष्य दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस द्वारा उनकी निशानदेही पर हथियार की झूठी बरामदगी दिखाई गई है और उन्हें घर से गिरफ्तार किया गया है।

(20) प्रतिरक्षा में, अभियुक्त व्यक्तियों/अपीलार्थियों द्वारा कोई मौखिक या दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है।

(21) लोक अभियोजक और प्रतिरक्षा की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता को सुनने के बाद तथा अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य और सामग्री पर विचार करने के बाद, विद्वान सत्र न्यायालय, उन्नाव ने अभियुक्त पप्पू, कुंजी, मुंशी राम को भारतीय दंड संहिता की धारा 148, 302/149, 307/149, 452, 404 के तहत आरोपों से बरी कर दिया और सत्र विचारण संख्या 229 वर्ष 2001 में आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत आरोपों से अभियुक्त राम कुमार और मेवा लाल को बरी कर दिया, सत्र विचारण संख्या 230 वर्ष 2001 में आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत आरोपों से अभियुक्त शिव राम को बरी कर दिया, सत्र विचारण संख्या 231 वर्ष 2001 में आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत आरोपों से अभियुक्त पप्पू को बरी कर दिया; सत्र विचारण संख्या 232 वर्ष 2001 में आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत आरोपों से अभियुक्त देशा उर्फ देशराज और मिश्रा उर्फ मिश्री लाल को बरी कर दिया, सत्र विचारण संख्या 233 वर्ष 2001 में आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत आरोपों से अभियुक्त शंकर को बरी कर दिया, सत्र विचारण संख्या 234 वर्ष 2001 में आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत आरोपों से अभियुक्त राम प्रकाश को बरी कर दिया और सत्र विचारण संख्या 235 वर्ष 2001 में आयुध अधिनियम की धारा 25 के तहत आरोपों से अभियुक्त रामपाल को बरी कर दिया तथा मुकदमा अपराध संख्या 41 वर्ष 2001 से उद्भूत सत्र विचारण संख्या 228 वर्ष 2001 में अभियुक्त राम पाल, शंकर, शिव नाथ, मिश्रा उर्फ मिश्री लाल, शिव राम, देशा उर्फ देशराज, शिव कुमार, राम प्रकाश, राम कुमार, राम विलास और मेवा लाल को एक साझा निर्णय और आदेश दिनांक 18.12.2004 के माध्यम से दोषी ठहराया और निम्नानुसार दंडित किया:-

- भारतीय दंड संहिता की धारा 148 के तहत 3 वर्ष के सश्रम कारावास का दंड;
- भारतीय दंड संहिता की धारा 149 के साथ पठित धारा 302 के तहत आजीवन कारावास का दंड;
- भारतीय दंड संहिता की धारा 149 के साथ पठित धारा 307 के तहत 12 वर्ष के सश्रम कारावास का दंड;
- भारतीय दंड संहिता की धारा 452 के तहत 6 वर्ष के सश्रम कारावास का दंड;
- भारतीय दंड संहिता की धारा 404 के तहत 6 वर्ष के सश्रम कारावास का दंड।

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा आगे यह भी निर्देशित किया गया है कि उपरोक्त सभी सजाएं साथ-साथ चलेंगी।

(22) निर्णय और आदेश दिनांक 18.12.2004 से व्यथित होकर, सिद्धदोष/अपीलार्थी शंकर, देशा उर्फ देशराज, शिव राम, शिव नाथ, मिश्रा उर्फ मिश्री लाल और राम पाल ने आपराधिक अपील संख्या 255 वर्ष 2005 दायर की है, सिद्धदोष/अपीलार्थी शिव कुमार ने आपराधिक अपील संख्या 254 वर्ष 2005 दायर की है, सिद्धदोष/अपीलार्थी राम प्रकाश, राम कुमार और राम विलास ने आपराधिक अपील संख्या 43 वर्ष 2005 दायर की है और सिद्धदोष/अपीलार्थी मेवा लाल ने आपराधिक अपील संख्या 231 वर्ष 2005 दायर की है।

(23) विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता ने सूचित किया है कि आदेश दिनांक 18.12.2004 के माध्यम से अन्य अभियुक्त व्यक्तियों को बरी किए जाने के खिलाफ, राज्य या शिकायतकर्ता की ओर से कोई अपील दायर नहीं की गई है।

(24) यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि आपराधिक अपील संख्या 43 वर्ष 2005 में, अपीलार्थी संख्या 2-राम कुमार की मृत्यु हो चुकी है, इसलिए अपीलार्थी संख्या 2-राम कुमार की ओर से दायर आपराधिक अपील संख्या 43 वर्ष 2005 आदेश दिनांक 04.04.2025 के माध्यम से उपशमित (एबेटेड) कर दी गई थी। अब, आपराधिक अपील संख्या 43 वर्ष 2005 केवल अपीलार्थी संख्या 1-राम प्रकाश और अपीलार्थी संख्या 3-राम विलास की ओर से बची है।

(25) आपराधिक अपील संख्या 43 वर्ष 2005 में अपीलार्थियों के विद्वान न्यायमित्र श्री श्रीश कुमार मिश्रा अटल ने तर्क दिया कि दोषसिद्धि और सजा का आक्षेपित निर्णय और आदेश विचारण न्यायालय द्वारा अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य और सामग्री पर उचित रूप से विचार और मूल्यांकन किए बिना पारित किया गया है। उन्होंने तर्क दिया कि हमलावरों की एक बड़ी संख्या दिखाई गई है लेकिन घायल और मृतक को केवल दो या तीन चोटें ही आई हैं। किसी भी हमलावर को कोई विशिष्ट भूमिका नहीं सौंपी गई है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि हथियारों की बरामदगी साबित नहीं हो सकी, इसलिए अपीलार्थियों को आयुध अधिनियम की धारा 3/25 के तहत बरी कर दिया गया है और एक बार जब बरामदगी साबित नहीं हो सकी, तो विचारण न्यायालय ने अपीलार्थियों को दोषी ठहराने में गंभीर अनियमितता की है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि विद्वान विचारण न्यायालय यह विचार करने में विफल रहा कि घटनास्थल पर प्रकाश का कोई स्रोत नहीं था और दिखाया गया प्रकाश हमलावरों को पहचानने के लिए पर्याप्त नहीं था। उन्होंने आगे तर्क दिया कि कथित दिखाई गई घटना 11.02.2001 की रात 08:00-09:00 बजे की है, लेकिन मृतकों के आमाशय में कोई भोजन नहीं पाया गया है, जबकि गांवों में लोग आमतौर पर उस समय तक भोजन कर लेते हैं। इस प्रकार, आक्षेपित निर्णय और आदेश विधि की दृष्टि में पोषणीय नहीं है और अपास्त किए जाने योग्य है तथा अपीलार्थी बरी किए जाने के हकदार हैं।

(26) आपराधिक अपील संख्या 231 वर्ष 2005 में अपीलार्थी के विद्वान न्यायमित्र श्री चंद्र शेखर पांडे ने तर्क दिया कि प्रथम सूचना रिपोर्ट न केवल विलंबित है बल्कि समय से पूर्व भी है क्योंकि घटनास्थल पर शिकायतकर्ता (अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू) की उपस्थिति संदेहास्पद है और उसकी गवाही से यह सामने आता है कि वह कथित घटना के समय अपनी ससुराल में था और उसे उसकी पत्नी और मां के साथ कोई चोट नहीं आई है, जो कि उसके द्वारा कथित तौर पर अपीलार्थियों द्वारा किए गए इस तरह के नरसंहार में "अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा

सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



संभव नहीं है। यह भी तर्क दिया गया है कि प्रथम सूचना रिपोर्ट के लेखक को प्रस्तुत नहीं किया गया है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना की गवाही विश्वसनीय नहीं है, क्योंकि सभी अभियुक्त व्यक्ति एक छोटे से कमरे में नहीं आ सकते थे जैसा कि उनके द्वारा दिखाया गया है। अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना ने यह भी स्वीकार किया है कि उनके बच्चा था लेकिन कोई बच्चा नहीं दिखाया गया है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना एक संबंध और हितबद्ध गवाह हैं और उन्होंने पोस्टमार्टम के बाद सुधार किया है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू मृतक के साले का पुत्र है और मौके पर उसकी उपस्थिति भी संदेहास्पद है। अभियोजन साक्षी-3-अरविंद संबंध और हितबद्ध गवाह है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि यद्यपि अभियोजन साक्षी-3-अरविंद एक घायल गवाह है लेकिन उसकी गवाही विश्वसनीय नहीं है, क्योंकि पुलिस द्वारा उसे अस्पताल भेजने का कोई साक्ष्य नहीं था और दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 161 के तहत उसका बयान विवेचक द्वारा अठारह दिनों के बाद दर्ज किया गया था, जिसमें विवेचक लज्जाराम यादव (अभियोजन साक्षी-8) ने भी उसकी चोटों का खुलासा नहीं किया है। यह भी तर्क दिया गया है कि कोई स्वतंत्र गवाह नहीं है और मृतक द्वारा आग तापने का भी कोई साक्ष्य नहीं पाया गया है। इस प्रकार, तर्क यह है कि अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य केवल संबंध और हितबद्ध गवाहों के हैं, जिन पर सावधानी और सतर्कता के साथ विचार किया जाना चाहिए था, लेकिन विचारण न्यायालय तदनुसार विचार करने में विफल रहा। उन्होंने आगे तर्क दिया कि प्रथम सूचना रिपोर्ट और अभियोजन पक्ष द्वारा आरोपित हेतु (मोटिव) अपीलार्थियों के विरुद्ध नहीं है और प्रथम सूचना रिपोर्ट में पुरानी घटना का उल्लेख यह दर्शाता है कि अज्ञात व्यक्तियों द्वारा डकैती और हत्या के बाद केवल अपीलार्थियों को फंसाने के लिए परामर्श और सोच-विचार के बाद प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि पांच मृतकों के पोस्टमार्टम का समय और उनके बीच का अंतर बहुत कम है, इसलिए इसे भी उचित रूप से नहीं किया गया है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू ने स्वीकार किया है कि मेवालाल और राम विलास को उसके घर से गिरफ्तार किया गया था और यदि वे अपीलार्थियों द्वारा किए गए कथित नरसंहार में शामिल होते और उसी गांव के निवासी होते, तो वे घर पर नहीं रुकते, विशेष रूप से तब जब उन्हें घायल अरविंद, शिकायतकर्ता और अन्य लोगों ने देखा था। उन्होंने आगे तर्क दिया कि यह अज्ञात व्यक्तियों द्वारा मृतकों की हत्या के साथ डकैती का मामला था और दुश्मनी के कारण अपीलार्थियों को इस मामले में झूठा फंसाया गया है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि प्रथम सूचना रिपोर्ट में लगभग पच्चीस व्यक्ति दिखाए गए हैं, जो सभी एक छोटे से कमरे में घुस गए और मृतक राम खेलावन की हत्या कर दी, जो संभव नहीं है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि यह बहुत अजीब है कि घायल बच्चे को कोई चिकित्सीय सहायता प्रदान करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। घटना शाम को 08:00-09:00 बजे के बीच की है और घायल गवाह (अभियोजन साक्षी-3-अरविंद) ने बयान दिया है कि वह सुबह करीब 08:00-08:30 बजे चिकित्सीय उपचार के लिए गया था, जहां उसे लगभग अठारह दिनों के लिए भर्ती किया गया था और उसका बयान अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद दर्ज किया गया था, जबकि इतनी लंबी अवधि तक अस्पताल में उसके भर्ती होने का न तो कोई प्रमाण है और न ही उसकी चोटें यह दर्शाती हैं कि इसकी आवश्यकता थी। इस प्रकार, घायल गवाह अभियोजन साक्षी-3-अरविंद का साक्ष्य भी विश्वसनीय नहीं है और उसकी उपस्थिति भी संदेहास्पद है। इसलिए, उन्होंने तर्क दिया कि आक्षेपित निर्णय और आदेश विधि की दृष्टि में पोषणीय नहीं है और अपास्त किए जाने योग्य है तथा अपीलार्थी बरी किए जाने के हकदार हैं।

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



(27) आपराधिक अपील संख्या 255 वर्ष 2005 में अपीलार्थियों के विद्वान न्यायमित्र श्री आदर्श मेहरोत्रा ने तर्क दिया कि प्रथम सूचना रिपोर्ट की अंतर्वस्तु झूठी प्रतीत होती है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि अभियोजन पक्ष ने अपने मामले को साबित करने के लिए किसी भी स्वतंत्र गवाह का परीक्षण नहीं किया है। अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य में अनेक विसंगतियां हैं। अभियोजन पक्ष हथियारों की बरामदगी साबित करने में भी विफल रहा है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि विचारण न्यायालय द्वारा आयुध अधिनियम की धारा 3/25 के तहत बरी किया जाना ही प्रथम सूचना रिपोर्ट में कथित मामले को ध्वस्त कर देता है, लेकिन विचारण न्यायालय ने अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य और सामग्री पर उचित रूप से विचार किए बिना और धारणा तथा अनुमान के आधार पर निष्कर्ष दर्ज करते हुए अपीलार्थियों को दोषी ठहराया है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि अभियोजन पक्ष द्वारा दिखाया गया हेतु साबित नहीं हुआ है क्योंकि गजजू और राम किशोर के साथ कोई दुश्मनी साबित नहीं हुई है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि आठ अज्ञात व्यक्तियों के साथ कुछ निश्चित व्यक्तियों के खिलाफ प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की गई थी लेकिन अभियोजन पक्ष द्वारा उनकी पहचान न तो प्रकट की गई और न ही साबित की गई। उन्होंने आगे तर्क दिया कि दुश्मनी राजेश के साथ हो सकती थी, जिसने कसम खाई थी कि वह सरजू के परिवार को मार डालेगा, जिसे अभियोजन पक्ष के गवाहों द्वारा भी साबित नहीं किया गया है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि यह बहुत अजीब है कि इतने बड़े नरसंहार में, शिकायतकर्ता गुड्डू (अभियोजन साक्षी-2) को कोई चोट नहीं आई, जबकि उसने स्वीकार किया कि उसने अभियुक्त व्यक्तियों को देखा था और बेहोश हो गया था तथा लगभग दो घंटे तक इसी स्थिति में रहा। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना का साक्ष्य इस कारण से विश्वसनीय नहीं है कि एक तरफ वह कहती हैं कि वह सुबह नरसंहार के बाद अपने माता-पिता से मिलने गई थीं और दूसरी तरफ वह कहती हैं कि वे मर चुके थे, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि या तो वह मौके पर उपस्थित नहीं थीं या झूठ बोल रही थीं। अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना यह भी कहती हैं कि वह तीन दिन बाद शवगृह गई थीं जब उन्हें हमलावरों के नाम पता चले। उन्होंने आगे तर्क दिया कि यह बहुत अजीब है कि एक विवाहित महिला, जिसका पति उसकी आंखों के सामने मार दिया गया हो, वह अपने माता-पिता के घर चली जाएगी और वहां तीन दिन तक रहेगी और उसके बाद वह शवगृह जाएगी और वहां अपने परिवार के सदस्यों को ढूंढ पाएगी, जबकि पोस्टमार्टम अगले दिन ही हो गया था। उन्होंने आगे तर्क दिया कि लूट की कहानी और उक्त उद्देश्य के लिए राम खेलावन की हत्या के करीब आधे घंटे बाद हमलावरों का वापस आना भी बहुत असंभाव्य है, क्योंकि पप्पू से केवल एक झुमकी बरामद हुई है, जिसे बरी कर दिया गया है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि साक्ष्य के अनुसार, अभियुक्त व्यक्तियों ने अपने चेहरों को अंगोछे से ढक रखा था, इसलिए गवाहों द्वारा उन्हें पहचानने का प्रश्न ही नहीं उठता और इस नाते भी उनका साक्ष्य विश्वास योग्य नहीं है। इस प्रकार, उन्होंने तर्क दिया कि आक्षेपित निर्णय और आदेश विधि की दृष्टि में पोषणीय नहीं है और अपास्त किए जाने योग्य है तथा अपीलार्थी बरी किए जाने के हकदार हैं।

(28) अपने तर्कों के समर्थन में, श्री आदर्श मेहरोत्रा ने मो. जब्बार अली और अन्य बनाम असम राज्य; 2022 एससीसी ऑनलाइन एससी 1440, दिगंबर वैष्णव और एक अन्य बनाम छत्तीसगढ़ राज्य; आपराधिक अपील संख्या 428-430 वर्ष 2019, निर्णय दिनांक 05.03.2019, नंजे गौड़ा बनाम कर्नाटक राज्य अरकलगुड पुलिस के माध्यम से; 2017 क्रिमिनल लॉ जर्नल 2830, पेरियासामी बनाम राज्य प्रतिनिधि पुलिस निरीक्षक के माध्यम से; 2024 एससीसी ऑनलाइन एससी 314, और राम सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य; (2024) 4 एससीसी 208 पर भरोसा किया।

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



(29) आपराधिक अपील संख्या 254 वर्ष 2005 में अपीलार्थी के विद्वान न्यायमित्र श्री अमर नाथ दुबे ने भी इसी तरह के तर्क दिए और तर्क दिया कि नरसंहार और लूट की अभियोजन की कहानी अत्यधिक असंभाव्य है और अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य उनके साक्ष्य में अंतर्विरोधों को देखते हुए पोषणीय नहीं हैं। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि एक छोटा कमरा जिसमें अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना अपने पति के साथ लेटी हुई थीं, वह केवल 5-6 हाथ लंबा और उसी चौड़ाई का है, जिसमें यह संभव नहीं है कि सभी हमलावर प्रवेश कर सकते थे और उनके पति की हत्या कर सकते थे। इस प्रकार, उन्होंने तर्क दिया कि आक्षेपित निर्णय और आदेश विधि की दृष्टि में पोषणीय नहीं है और अपास्त किए जाने योग्य है तथा अपीलार्थी बरी किए जाने के हकदार हैं।

(30) विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता ने चारों अपीलों में अपीलार्थियों के विद्वान न्यायमित्र के तर्कों का पुरजोर विरोध किया और तर्क दिया कि राम किशन की हत्या में अभियुक्त पप्पू, कुंजी और मंसा राम को बरी कर दिया गया है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि केवल इसलिए कि प्रथम सूचना रिपोर्ट में हेतु दिखाया गया है, यह नहीं कहा जा सकता कि प्रथम सूचना रिपोर्ट मनगढ़ंत है। वहां लालटेन और दीयों के प्रकाश का स्रोत था। उन्होंने आगे तर्क दिया कि घटना का चश्मदीद विवरण मौजूद है और अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना, अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू और अभियोजन साक्षी-3-अरविंद, जो घायल गवाह हैं, चश्मदीद गवाह हैं, जिन्होंने घटना को साबित किया है और जब चश्मदीद गवाह अडिग हैं, तो हेतु का महत्व समाप्त हो जाता है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना गांव की एक ग्रामीण महिला हैं और उनके तथा अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू द्वारा दी गई घटनाओं का क्रम स्वाभाविक है और केवल इसलिए कि उनके साक्ष्य में कुछ अंतर्विरोध हैं, उन्हें अविश्वसनीय नहीं कहा जा सकता और उनके साक्ष्य को खारिज नहीं किया जा सकता। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि समय बीतने के कारण कुछ अंतर्विरोध संभव हैं और याद रखने की क्षमता के कारण यह व्यक्ति-दर-व्यक्ति भिन्न भी होता है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि अज्ञात व्यक्तियों द्वारा डकैती और मृतक की हत्या का तर्क गलत है और मानने योग्य नहीं है, क्योंकि इसे साबित करने के लिए कोई प्रतिरक्षा गवाह पेश नहीं किया गया है। उन्होंने आगे तर्क दिया कि दुश्मनी साबित हो चुकी है। इस प्रकार, दोषसिद्धि का आक्षेपित निर्णय और आदेश विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य और सामग्री पर विचार करने तथा सकारण और सुस्पष्ट आदेश द्वारा उचित रूप से उसका मूल्यांकन करने के बाद विधि के अनुसार सही पारित किया गया है। विचारण न्यायालय द्वारा पारित आक्षेपित निर्णय और आदेश में कोई अवैधता या त्रुटि नहीं है, जिसमें इस न्यायालय द्वारा किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता हो। सभी अपीलें आधारहीन हैं और उनमें गुण-दोष का अभाव है, इसलिए खारिज किए जाने योग्य हैं।

(31) अपने तर्कों के समर्थन में, विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता ने तहसीलदार सिंह और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य; एआईआर 1959 एससी 1012, उत्तर प्रदेश राज्य बनाम नरेश और अन्य; (2011) 4 एससीसी 324, बबन शंकर दफाल और अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य; एआईआर 2025 एससी 599, पृथ्वीराज जयंतीभाई वनोल बनाम दिनेश दयाभाई वाला और अन्य; (2022) 18 एससीसी 683, गंगाभवानी बनाम रायपति वेंकट रेड्डी और अन्य; (2013) 15 एससीसी 298, सुच्चा सिंह और अन्य बनाम पंजाब राज्य; (2003) 7 एससीसी 643, दलीप सिंह और अन्य बनाम पंजाब राज्य; एआईआर 1953 एससी 364, रावसाहेब और अन्य बनाम कर्नाटक राज्य; (2023) 5 एससीसी 391, ओम पाल और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (अब उत्तराखंड राज्य); मनु/एससी/1457/2025, हरिभाऊ और अन्य बनाम

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



महाराष्ट्र राज्य; मनु/एससी/1463/2025, लालजी और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य; (1989) 1 एससीसी 437, और मसालती और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य; 1964 एससीसी ऑनलाइन एससी 30 पर भरोसा किया।

(32) हमने पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ता को सुना है और अभिलेख का अवलोकन किया है।

(33) विद्वान विचारण न्यायालय ने, पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ताओं को सुनने के बाद, यह अभिलिखित किया कि विचाराधीन मामले पर विचार करने के लिए, जिसमें कथित तौर पर 18 व्यक्तियों द्वारा 5 व्यक्तियों की हत्या की गई है, संपूर्ण मामले पर अभियोजन साक्षी-1, अभियोजन साक्षी-2 और अभियोजन साक्षी-3 के साक्ष्य के आधार पर विचार किया जाना है। यह एक अत्यंत गंभीर मामला है, इसलिए, जैसा कि पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ताओं द्वारा तर्क दिया गया है, साक्ष्य का गहराई से परीक्षण किया जाना आवश्यक है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि विद्वान विचारण न्यायालय ने घटना में 5 हत्याओं और 18 व्यक्तियों की कथित संलिप्तता को ध्यान में रखते हुए अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य का परीक्षण करने की कार्यवाही की। घटना की गंभीरता पर विवाद नहीं किया जा सकता। हालांकि, चूंकि विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा पारित निर्णय को चुनौती दी गई है, इसलिए इस न्यायालय को यह देखना होगा कि विद्वान विचारण न्यायालय ने अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य और सामग्री का उचित रूप से परीक्षण किया है या नहीं।

(34) घटना की प्रथम सूचना रिपोर्ट अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू द्वारा दर्ज कराई गई थी, जो वर्तमान मामले में घटना के अपराध के हेतु को दर्शाने के लिए लगभग 19 वर्ष पहले उसके चाचा राम किशन की हत्या और उसके चाचा की हत्या के एक अभियुक्त गज्जू की लगभग दो वर्ष पहले हुई हत्या से शुरू होती है। यह आरोप लगाया गया है कि गज्जू, राम कुमार, राम किशन और राज कुमार के साले हरि ने करीब 19 वर्ष पहले उसके चाचा किशन की हत्या कर दी थी, जिसमें इन सभी अभियुक्त व्यक्तियों को दोषसिद्ध किया गया था और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। गज्जू और राम किशन की मृत्यु हो चुकी है। उसके मृत चाचा किशन के बेटों, अनिल और सिद्धा नाथ तथा छोट्टा के बेटों, सबेदार और राम बली ने वर्ष 1999 में गज्जू की हत्या कर दी थी। उक्त पारिवारिक दुश्मनी के कारण, दिनांक 11.02.2001 को रात करीब 08:00-09:00 बजे, 15 नामजद अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा 7-8 अन्य अज्ञात अभियुक्त व्यक्तियों के साथ मिलकर घटना को अंजाम दिया गया, जैसा कि प्रथम सूचना रिपोर्ट में कहा गया है, और उसमें वर्णित तरीके से परिवार के पांच व्यक्तियों की हत्या कर दी गई तथा एक बच्चे को घायल कर दिया गया।

(35) अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू ने बयान दिया कि घटना करीब आठ महीने पहले की है। रात के करीब 08:00-09:00 बजे थे जब वह आग तापने के लिए घर से बाहर जा रहा था। उसने देखा कि राम पाल, शंकर, मिश्रा, शिव राम, शिव नाथ, देशा, इंद्रपाल, बददुअन, राम सिंह, शिव कुमार, मनोज, राम कुमार, राम विलास, राम प्रकाश, मेवा लाल और 7-8 अन्य व्यक्ति आए। वे कट्टा, कुल्हाड़ी, बंदूक और लाठी से लैस थे। उसके पिता छप्पर के नीचे आग ताप रहे थे और दरवाजे के नीचे लालटेन जल रही थी। उक्त अभियुक्त व्यक्तियों ने उसके पिता सरजू पर गोली चलाई, जो गिर गए और उनकी मृत्यु हो गई। उसका भाई चंद्रिका, गोली की आवाज सुनकर बाहर आया, तो 7-8 अभियुक्त व्यक्तियों ने उसका पीछा किया और गांव के बाहर घूरे के पास उसकी हत्या कर दी। कुछ व्यक्ति उसके घर में घुस गए और उन्होंने उसके भाई मंगल पर कुल्हाड़ी से वार करके तथा बंदूक से गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। उसकी भाभी सताना की भी

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा रसोई में आग्नेयास्त्र से गोली मारकर हत्या कर दी गई। उसका भतीजा अरविंद छप्पर के नीचे भैंस को चारा दे रहा था। जब वह अपनी भाभी को बचाने के लिए चिल्लाने लगा, तो अभियुक्तों ने उस पर बंदूक के कुंदे, कट्टे के कुंदे और कुल्हाड़ी से वार किया, जिससे उसे चोटें आईं। इसके बाद अभियुक्त व्यक्तियों ने कहा, "चलो राम खेलावन को मारने चलें।" राम खेलावन उसका चचेरा भाई था। अभियुक्तों ने उसकी भी हत्या कर दी। उसके बाद, अभियुक्त व्यक्ति फिर से उसके घर लौटे और उन्होंने उसकी मृत भाभी सताना के गले से सोने की चेन और कान के झुमके छीन लिए। अभियुक्त व्यक्ति शादी के लिए रखे गए चार बटुए, बड़ी थालियां, आभूषण आदि वाले चार बक्से भी ले गए और गोलीबारी करते हुए अभियुक्त गांव से बाहर भाग गए।

(36) अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू (शिकायतकर्ता) ने आगे बयान दिया कि उसके बाद वह और अन्य लोग बाहर आए और मृतकों को देखकर वह बेहोश हो गया। उसे रात करीब 12 बजे होश आया। सुबह 4:00 बजे वह मेथीटीकुर गया और वहां से वह बेलसी गया। उसकी ससुराल बेलसी में है। जब उसने अपने रिश्तेदारों को सूचित किया, तो वे उसके घर आए। उसने बेलसी में राम खेलावन से रिपोर्ट लिखवाई। राम खेलावन ने उसे रिपोर्ट पढ़कर सुनाई और फिर उसने रिपोर्ट पर अपने अंगूठे का निशान लगाया। कागज संख्या क 4/3 उसे पढ़कर सुनाया गया, जिस पर उसने बयान दिया कि यह वही रिपोर्ट थी जो उसने राम खेलावन से लिखवाई थी। उसने आगे बयान दिया कि उसने जो कुछ भी बताया था, वह राम खेलावन द्वारा लिखा गया था और उसे पढ़कर सुनाया गया था तथा उसके बाद उसने उस पर अपने अंगूठे का निशान लगाया था। यह रिपोर्ट प्रदर्श क-1 है। इसके बाद, वह थाने गया और मुंशी (कांस्टेबल/क्लर्क) को रिपोर्ट सौंपी, जिसके आधार पर प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की गई, जिसकी एक प्रति रजिस्टर पर उसके अंगूठे का निशान लेने के बाद उसे दी गई। उसने यह भी बयान दिया कि राधा उसकी सगी बहन थी, जिसका विवाह जमाल नगर के राकेश के साथ संपन्न हुआ था। राकेश ने उसकी बहन राधा को जहर देकर मार डाला था। उसने यह भी बयान दिया कि उसका बयान निरीक्षक द्वारा थाने में दर्ज किया गया था। इसके बाद, निरीक्षक उसके साथ गांव आया, जहां से पुलिसकर्मी उसके भतीजे अरविंद को जीप से अस्पताल ले गए।

(37) प्रतिपरीक्षा में, अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू ने बयान दिया कि उसके ससुर और साले बेलसी में रह रहे हैं। वह अकेला मेथीटीकुर गया था, जहां उसके साले के पिता पोखकर रह रहे हैं। उसने उन्हें सूचित किया और उसके बाद उनके साथ वह बेलसी गया। पोखकर उसकी ससुराल में ही रुक गए। उसने यह भी बयान दिया कि उसका पिछला बयान, कि मेथीटीकुर के रिश्तेदार उसके घर आए थे, गलत है और बेलसी के रिश्तेदार उसके घर आए थे लेकिन वे उसके साथ उसके गांव नहीं आए थे क्योंकि वह थाने चला गया था। अपनी आगे की प्रतिपरीक्षा में, उसने बयान दिया कि थाना माखी बेलसी गांव में है, जो उसकी ससुराल से दो किलोमीटर दूर है। वह सुबह 05:00 बजे बेलसी पहुंचा। वह ससुराल में दस मिनट रुका। ससुराल से थाने पहुंचने में करीब बीस मिनट लगे। वह ससुराल से राम खेलावन के घर गया था। वह राम खेलावन को इससे पहले नहीं जानता था। उसके ससुर ने राम खेलावन का नाम बताया था। वह राम खेलावन के साथ थाने नहीं गया था। घटना की प्रथम सूचना रिपोर्ट दिनांक 12.02.2001 को सुबह 07:00 बजे दर्ज की गई थी, इसलिए अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू द्वारा थाने पहुंचने और प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने के बताए गए समय के बीच समय का अंतर है और उसकी गवाही में अंतर्विरोध भी है क्योंकि पहले वह कहता है कि

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा

सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



उसकी ससुराल से थाने पहुंचने में 20 मिनट लगे, उसके बाद वह कहता है कि वह अपनी ससुराल से राम खेलावन के पास गया था, जिसके बारे में उसके ससुर ने बताया था। प्रथम सूचना रिपोर्ट के लेखक राम खेलावन को पेश नहीं किया गया है, हालांकि लिखित रिपोर्ट में लेखक के रूप में उनका नाम उल्लिखित है। रिपोर्ट बहुत ही सुस्पष्ट तरीके से लिखी गई है जिसमें न केवल अभियुक्त व्यक्तियों के नाम बल्कि उनकी वल्लियत (पिता के नाम) भी क्रमवार दी गई है, जिससे यह संदेह उत्पन्न होता है कि इसे पूरी तरह से शिकायतकर्ता द्वारा लिखवाया गया होगा, जो कथित नरसंहार के कारण पूरी रात सदमे में रहा होगा जिसमें उसके परिवार के पांच सदस्य मारे गए थे और एक घायल हो गया था। एक सामान्य व्यक्ति इतने कम समय में इतने सुस्पष्ट तरीके से प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखवाने के लिए ऐसे सदमे से बाहर नहीं आ पाता। यद्यपि अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू ने उक्त हत्याओं के अभियुक्तों के बारे में बयान दिया लेकिन अपनी प्रतिपरीक्षा में वह बयान देता है कि वह अपने चाचा किशन की हत्या के समय काफी छोटा था, इसलिए वह यह नहीं बता सकता कि संतु यादव की भी कुल्हाड़ी से हत्या की गई थी या नहीं। वह यह भी नहीं बता सकता कि संतु यादव ने साक्ष्य दिया था या नहीं और वह यह भी नहीं जानता कि अभियुक्त व्यक्तियों को संतु यादव के साक्ष्य पर दोषसिद्ध किया गया था या नहीं। इस प्रकार, एक तरफ, उसने वर्तमान मामले की घटना को लगभग 19 वर्ष पुरानी उक्त घटना से जोड़ते हुए हेतु दर्शाने और उस मामले के अभियुक्तों तथा उनके संबंधों का नाम लेते हुए प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखवाई, लेकिन उसे यह याद नहीं है कि संतु यादव अभियुक्त या गवाह था या नहीं। वैसे भी, विचारण न्यायालय में अपने साक्ष्य के समय उसकी आयु 30 वर्ष थी, इसलिए उपर्युक्त घटना के समय उसकी आयु लगभग 11 वर्ष रही होगी, जिससे यह भी संदेह उत्पन्न होता है कि उसने स्वयं रिपोर्ट लिखवाई होगी।

(38) अभियोजन साक्षी-2 ने यह भी बयान दिया है कि उसने रिपोर्ट में लिखवाया था कि घर के बाहर लालटेन जल रही थी, यदि राम खेलावन द्वारा रिपोर्ट में ऐसा नहीं लिखा गया है जैसा कि ऊपर बताया गया है, तो वह इसका कारण नहीं बता सकता, जबकि पहले उसने साक्ष्य में बयान दिया था कि उसके बताए अनुसार राम खेलावन द्वारा रिपोर्ट लिखे जाने के बाद उसे पढ़कर सुनाई गई थी और उसके बाद उसने अपने अंगूठे का निशान लगाया था। साक्ष्य के दौरान भी, उक्त लिखित रिपोर्ट उसे पढ़कर सुनाई गई थी और उसके बाद उसने बयान दिया कि यह वही रिपोर्ट थी, जो उसके बताए अनुसार लिखी गई थी। इन अंतर्विरोधों और ऊपर बताए गए अनुसार उसकी ससुराल से थाने पहुंचने में बीते समय को देखते हुए, ऐसा प्रतीत होता है कि रिपोर्ट उसके बताए अनुसार नहीं लिखी गई थी और यह भी कि रिपोर्ट किसी और द्वारा लिखवाई गई थी और किसी भी स्थिति में, प्रथम सूचना रिपोर्ट के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि इसे शिकायतकर्ता द्वारा स्वयं लिखवाया गया था, वह भी बिना किसी परामर्श और सहायता के, और यह बाद की सोच भी हो सकती है, लेकिन शिकायतकर्ता द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए इसे थाने के समक्ष प्रस्तुत किया गया था।

(39) एक तर्क यह भी उठाया गया था कि गुड्डू (अभियोजन साक्षी-2) कथित घटना के समय उपस्थित नहीं था और वह अपनी ससुराल में था जहाँ से वह प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने गया था। शिकायतकर्ता गुड्डू ने अपनी मुख्य परीक्षा में बयान दिया कि घटना की तारीख को रात करीब 08:00-09:00 बजे वह आग तापने के लिए घर से बाहर आ रहा था, तभी अभियुक्त व्यक्ति, रामपाल, शंकर, मिश्रा, शिवराम, शिवनाथ, देशा, इंद्रपाल, बददुअन, राम सिंह, शिव कुमार, मनोज, राम कुमार, राम विलास, राम प्रकाश, मेवा लाल और 7-8 व्यक्ति आए, जो कट्टा, कुल्हाड़ी, बंदूकों और लाठियों से लैस थे। उस समय उसके

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



पिता सरजू घर के बाहर छप्पर के नीचे आग ताप रहे थे। दरवाजे के नीचे लालटेन जल रही थी। उक्त अभियुक्त व्यक्तियों ने उसके पिता पर गोली चलाई, जो गिर गए। उसका भाई चंद्रिका, गोली की आवाज सुनकर घर से बाहर आया, तो 7-8 व्यक्तियों ने उसका पीछा किया और गांव के बाहर घूरे पर उसकी हत्या कर दी। इसके बाद उसने बयान दिया कि अन्य व्यक्तियों को कैसे मारा गया, जिसका खुलासा ऊपर किया जा चुका है। उसने यह भी बयान दिया कि उसके चचेरे भाई राम खेलावन की हत्या करने के बाद, वे वापस आए और उसकी भाभी सताना के सोने की चेन और झुमके छीन लिए तथा बटुए आदि लेकर चले गए। प्रतिपरीक्षा में, उसने बयान दिया कि उसके पिता को गोली लगने के बाद, वह दरवाजे के पास छिप गया। वह दरवाजे के पास बाहर नहीं छिपा, बल्कि दरवाजे के पास कमरे के अंदर छिपा था। उसने आगे बयान दिया कि छप्पर के पीछे एक कमरा सटा हुआ है, जिसके नीचे उसके पिता सरजू आग ताप रहे थे। वह अभियुक्त व्यक्तियों के जाने तक वहीं छिपा रहा और वहीं से घटना देखता रहा। इस प्रकार, उसका साक्ष्य सुसंगत नहीं है और मुख्य परीक्षा तथा प्रतिपरीक्षा में अंतर्विरोध है। उसके छिपने का स्थान नजरी नक्शे की तुलना में भी अंतर्विरोधपूर्ण है, जिसे उसके बताने पर तैयार किया गया है।

(40) अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू ने आगे बयान दिया कि उसने निरीक्षक को घटनास्थल दिखाया था। उसने उनसे यह नहीं कहा था कि वह घर के पूर्वी हिस्से के कमरे में छिपा हुआ था और वह इसका कारण नहीं बता सका कि निरीक्षक द्वारा इसे कैसे दिखाया गया है। उसने यह भी बयान दिया कि उसने निरीक्षक को यह नहीं बताया था कि वह आग तापने के लिए बाहर आ रहा था। उसने आगे बयान दिया कि उसके पिता पर केवल एक गोली चलाई गई थी और शेष गोलियां हवा में चलाई गई थीं और उसके बाद उसके पिता पर कुल्हाड़ी से वार किया गया था, जबकि प्रतिपरीक्षा में उसने यह भी बयान दिया कि जब उसके पिता को गोली मारी गई तो वह छिप गया, जबकि प्रथम सूचना रिपोर्ट और मुख्य परीक्षा में उसने केवल गोली चलने और उसके कारण मृत्यु होने के बारे में बयान दिया है। यह दर्शाता है कि साक्ष्य में अंतर्विरोध है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट को देखते हुए उसने सुधार किया है। उसने आगे बयान दिया कि वह छिपा हुआ था और अभियुक्त व्यक्ति उसे ढूंढ रहे थे। डर के मारे वह अपने भाई चंद्रिका को कुछ नहीं बता सका। जब वह बाहर था, उसका भाई चंद्रिका बाहर आया और भाग गया। उसने आगे बयान दिया कि जब अभियुक्त व्यक्तियों ने उसके पिता सरजू पर हमला किया, तो उसने अभियुक्त व्यक्तियों को पहचान लिया था। हालांकि, उसने आगे बयान दिया कि वह उन अभियुक्त व्यक्तियों के नाम नहीं बता सकता जिन्होंने उसके भाई का पीछा किया था। वह यह नहीं बता सका कि क्या सभी अभियुक्त व्यक्ति घर में घुसे या उनमें से कितने घर में घुसे। वह यह भी नहीं बता सका कि कितने अभियुक्त व्यक्ति उसकी तलाश कर रहे थे। सभी अभियुक्त व्यक्ति टॉर्च जलाकर घर के अंदर सब जगह ढूंढ रहे थे, इसलिए उसने मान लिया कि वे उसे भी ढूंढ रहे थे। अन्य अभियुक्त व्यक्तियों ने मंगल और उसकी भाभी की हत्या की थी। उसने आगे बयान दिया कि उसका भतीजा अरविंद घटना के समय सो नहीं रहा था, बल्कि वह भैंस को चारा दे रहा था। उत्तर की ओर घर के बाहर एक छप्पर का शेड है। वहां एक भैंस बंधी थी और उसका भतीजा उसे चारा दे रहा था। अरविंद को पूर्व की ओर छप्पर के नीचे पीटा गया था। उसने आगे बयान दिया कि घटना के समय अरविंद सो रहा था। उसने निरीक्षक को यह नहीं दिखाया था कि अरविंद घर के अंदर दक्षिण की ओर सो रहा था, जहां उसे पीटा गया था। वह इसका कारण नहीं बता सका कि निरीक्षक ने नजरी नक्शे में यह कैसे दिखाया कि उसका भतीजा घर के अंदर दक्षिण की ओर सो रहा था और उसे वहीं पीटा गया था। उसने आगे बयान दिया कि घटना के समय अंदर चार दिए जल रहे थे और बाहर एक लालटेन जल रही थी। उसने आगे बयान दिया कि एक दिया चौके (आंगन) में, एक बरामदे में, एक कमरे में और एक छप्पर के नीचे जल रहा था। उसने आगे

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



बयान दिया कि जब अरविंद बाहर से अंदर की ओर भागा, तो उसने डलिया फेंक दी थी। अभियुक्त व्यक्तियों ने उसकी भाभी, मंगल और अरविंद को चोटें पहुंचाने में 10-15 मिनट का समय लिया था। उसने आगे बयान दिया कि जब अभियुक्त व्यक्ति राम खेलावन की हत्या करने के बाद दोबारा वापस आए और लूटपाट की, तो वह घर के अंदर उसी जगह छिपा हुआ था। वह डर के मारे छिपा हुआ था। उसके घर का दरवाजा बंद नहीं था। अभियुक्त व्यक्तियों ने वापस आने के लिए नहीं कहा था। अभियुक्त व्यक्ति उसे टॉर्च की रोशनी में ढूंढ रहे थे लेकिन वह टाट के बोरो के पीछे छिपा हुआ था, इसलिए वे उसे देख नहीं सके। उसने आगे बयान दिया कि उसने निरीक्षक को किसी भी अभियुक्त व्यक्ति का हुलिया नहीं बताया था और न ही रिपोर्ट में इसका खुलासा किया था। अभियुक्त व्यक्तियों के घटनास्थल से जाने के बाद उसने अपनी मां और भतीजे से कोई बातचीत नहीं की थी। उसने आगे बयान दिया कि अभियुक्त व्यक्तियों के नाम पहली बार उसने राम खेलावन से रिपोर्ट में लिखवाए थे।

(41) उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, शिकायतकर्ता अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू के अनुसार, उसने घर से बाहर आते समय सभी अभियुक्त व्यक्तियों को देखा था और उसने 15 व्यक्तियों को नामजद किया है तथा 7-8 अज्ञात व्यक्तियों के बारे में बताया है। उसने यह भी तर्क दिया कि जब वह घर के अंदर से बाहर आ रहा था, तब अभियुक्त व्यक्तियों ने उसके पिता की हत्या कर दी थी, जिस पर उसने खुद को छिपा लिया था। यह न्यायालय यह समझने में असमर्थ है कि कोई व्यक्ति उस अवधि में, जो कि बहुत कम रही होगी, 23-24 व्यक्तियों को कैसे गिन सकता है और कम से कम पंद्रह व्यक्तियों की पहचान भी कर सकता है। यह भी अत्यंत अस्वाभाविक है कि एक व्यक्ति, जो टाट के बोरो के पीछे एक कमरे के अंदर छिपा हो, वह पूरी घटना को देख सकता था, जबकि अलग-अलग व्यक्तियों को घर के अलग-अलग स्थानों पर मारा गया है और एक व्यक्ति को काफी दूरी पर स्थित दूसरे घर में मारा गया है, यानी उसका चचेरा भाई, वह भी उसके द्वारा दिखाए गए प्रकाश के स्रोत में, और उसे यह कैसे पता चला कि अभियुक्त व्यक्ति उसकी हत्या करने के बाद वापस आए थे और तब तक वह खुद को छिपाए रखेगा। यह विश्वसनीय नहीं है कि एक व्यक्ति, जो खुद को छिपा रहा है, उसने इतनी बड़ी संख्या में अभियुक्त व्यक्तियों को उसकी भाभी के आभूषण छीनते हुए देखा होगा, जो कहीं और पड़ी थी, और बहुत सारे सामान के साथ जाते हुए देखा होगा, जो ऐसा प्रतीत होता है कि किसी विवाह के लिए रखे गए थे, जैसा कि गवाहों के साक्ष्य से सामने आया है। उसने अभियुक्त व्यक्तियों का गजजू के साथ संबंध प्रकट किया है, जो उसके चाचा किशन की हत्या में अभियुक्त थे। हालांकि उसने तर्क दिया कि मेवालाल सह-अपराधी था लेकिन स्वीकार किया कि मेवालाल और प्रीतम तथा उसके पुत्रों से कोई दुश्मनी नहीं है। विवेचक द्वारा दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 161 के तहत दर्ज किए गए बयान और नजरी नक्शे, जो उसके बताने पर तैयार किया गया था, की तुलना में अरविंद को पीटने के स्थान में अंतर्विरोध है। इस प्रकार, घटनास्थल पर शिकायतकर्ता अभियोजन साक्षी-2 की उपस्थिति संदेहास्पद है। यदि वह घटनास्थल पर उपस्थित था भी, तो यह नहीं कहा जा सकता कि वह उस स्थान से सभी अभियुक्त व्यक्तियों को देख सकता था, जहां वह टाट के बोरो के पीछे एक कमरे में छिपा हुआ था। इस प्रकार, शिकायतकर्ता अभियोजन साक्षी-2-गुड्डू का साक्ष्य और आचरण अभियोजन के मामले और उसके साक्ष्य की सत्यता पर संदेह पैदा करता है। हालांकि, घटनास्थल पर शिकायतकर्ता की उपस्थिति के संदेह के संबंध में तर्क को विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा इस आधार

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



पर खारिज कर दिया गया है कि यह कल्पना पर आधारित है, जो कि मानने योग्य नहीं है। विद्वान विचारण न्यायालय ने इस आधार पर भी यह निष्कर्ष दर्ज किया कि उसका साक्ष्य सुसंगत और स्वाभाविक है कि यदि संपूर्ण साक्ष्य का अनुशीलन करने पर सत्य का अनुमान लगाया जाता है, तो साक्ष्य में किसी लोप के कारण मृतकों और घायल को दंडित नहीं किया जा सकता है और अभियुक्त को किसी भी तरह से लाभ नहीं होगा, जबकि आपराधिक विचारण में मृतकों और घायल को किसी भी प्रकार के दंड का प्रश्न ही नहीं उठता।

(42) राम खेलावन की पत्नी, अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना ने बयान दिया है कि लगभग आठ महीने पहले, रात करीब 8:00-09:00 बजे, वह घर के अंदर कमरे में सो रही थी और कमरे के अंदर लालटेन जल रही थी। जब उसके घर का दरवाजा जबरन खटखटाया गया और गोली चलने की आवाजें सुनाई दीं, तो वह जाग गई। जब अभियुक्त व्यक्तियों ने उसके घर का दरवाजा तोड़ना शुरू किया, तो उसका पति राम खेलावन कमरे की लकड़ी की टांड पर जाकर बैठ गया। जब दरवाजा तोड़ा जा रहा था, तब बाहर गोलीबारी हो रही थी। शंकर, रामपाल, मिश्री लाल, शिव राम, शिव नाथ, शिव कुमार, मनोज, देशा, इंद्रपाल, राम सिंह, बददुअन, राम कुमार, राम विलास, राम प्रकाश, मेवा लाल, मंसा राम, मंसा राम का पुत्र, कुंजी और कट्टा, देसी पिस्तौल, कुल्हाड़ी, लाठी, डंडे से लैस पप्पू उसके घर में घुस आए। इन लोगों ने उसके पति को टांड से नीचे धकेल दिया और फिर वे कुल्हाड़ी, लाठी और डंडे से उसके पति पर वार करने लगे। उसके पति की मृत्यु हो गई। उसने विचारण न्यायालय में उपस्थित अभियुक्त व्यक्तियों को पहचान लिया। वहां से अभियुक्त व्यक्ति गुड्डू के घर की ओर चले गए। इस घटना में चंद्रिका की पत्नी सताना, चंद्रिका, उसके ससुर सरजू और मंगल की मृत्यु हो गई। अभियुक्त व्यक्ति चिल्लाते और गोलीबारी करते हुए चले गए।

(43) अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना का साक्ष्य उसकी उपस्थिति और साक्ष्य के बारे में गंभीर संदेह पैदा करता है क्योंकि वह बयान देती है कि उपरोक्त 18 व्यक्ति उसके कमरे में घुस आए थे, जो उसके अनुसार, लगभग 5 से 6 हाथ लंबा और 5 से 6 हाथ चौड़ा था। यह न्यायालय यह समझने में असमर्थ है कि अठारह व्यक्ति इतने छोटे कमरे में कैसे आ सकते हैं और अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना जैसी युवा महिला उन सभी को उनके नामों के साथ कैसे पहचान सकती है, विशेषकर तब जब उसके अनुसार, सभी अठारह व्यक्तियों ने अपने चेहरों को अंगोछे से ढक रखा था, भले ही वे उसके परिचित थे, जिसका कि उसके द्वारा उल्लेख नहीं किया गया है। उसने यह भी बयान दिया है कि उसके पति की हत्या के बाद, वह यह देखने के लिए बाहर नहीं गई थी कि क्या हुआ क्योंकि उसकी अपनी समस्या थी, लेकिन वह अगली सुबह घटना की सूचना देने के लिए अपने माता-पिता के घर चली गई, जहां वह अपने भाई से मिली क्योंकि उसके माता-पिता की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी और वह वहां दो दिनों तक रुकी रही तथा तीसरे दिन, वह अपने भाई के साथ सीधे शवगृह गई, जहां उसे पता चला कि उपरोक्त व्यक्तियों के नाम प्रथम सूचना रिपोर्ट में लिखे गए हैं। इस प्रकार, अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना को घटना के तीसरे दिन शवगृह में पहली बार उन व्यक्तियों के नामों का पता चला, जिनके बारे में कथित तौर पर घटना में शामिल होने का आरोप था। घटना दिनांक 11/12.02.2021 की मध्यवर्ती रात की है। इसलिए, उसके अनुसार, वह दिनांक 12.02.2021 की सुबह माता-पिता के घर गई और दिनांक 14.02.2021 को शवगृह गई होगी, जबकि मृतक व्यक्तियों का पोस्टमार्टम दिनांक 12.02.2021 की शाम को किया गया था, इसलिए घटना के तीसरे दिन

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



मृतक व्यक्तियों के शवों के शवगृह में पड़े होने और वहां रिश्तेदारों की उपस्थिति का प्रश्न ही नहीं उठता और इस पर विश्वास भी नहीं किया जा सकता क्योंकि एक बार पोस्टमार्टम हो जाने के बाद, शवों को अंतिम संस्कार के लिए परिवार के सदस्यों द्वारा प्राप्त कर लिया गया होगा और अंतिम संस्कार उसी दिन या अगले दिन कर दिया गया होगा। यह अत्यधिक असंभाव्य है कि एक युवा महिला, जिसका पति ऐसे नरसंहार में मारा गया हो, वह अपने पति के शव को छोड़कर अपने माता-पिता के घर चली जाएगी और अपने पति के शव को छोड़कर वहां दो दिनों तक रहेगी।

(44) अभियोजन साक्षी-2-श्रीमती अगना ने यह भी बयान दिया कि घटना की तारीख को शाम 07:00-08:00 बजे भोजन तैयार किया गया था। जो भोजन दोपहर में तैयार किया गया था, उसे शाम 04:00-05:00 बजे खाया गया था। जो भोजन शाम को तैयार किया गया था, उसे बच्चों ने खाया था और उन्होंने भोजन नहीं किया था। इस संबंध में, अपीलार्थियों के विद्वान न्यायमित्र द्वारा यह तर्क उठाया गया था कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट जानने के बाद साक्ष्य में जानबूझकर ऐसा बयान दिया गया है। अभियोजन साक्षी-2-श्रीमती अगना के आचरण और साक्ष्य की प्रकृति को देखते हुए, इसकी संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है।

(45) मुख्य परीक्षा में प्रकाश के स्रोत के संबंध में, अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना ने बयान दिया कि कमरे के अंदर लालटेन जल रही थी, जबकि प्रतिपरीक्षा में उसने बयान दिया कि लालटेन कमरे के बाहर खूँटी पर लटक रही थी और उसका प्रकाश ठीक दरवाजे के ऊपर था, जिस पर उसका पति बैठा था। इसलिए, उसके कमरे में प्रकाश के स्रोत के संबंध में उसके बयान में अंतर्विरोध है, क्योंकि यदि लालटेन कमरे के बाहर थी, तो यह स्वीकार नहीं किया जा सकता कि उसने अपने कमरे में प्रवेश करने वाले व्यक्तियों को पहचान लिया होगा क्योंकि जब वे उसके कमरे में घुसे, तो प्रकाश निश्चित रूप से उनकी पीठ पर रहा होगा और उसके साक्ष्य के अनुसार, सभी व्यक्तियों ने अपने चेहरे अंगोछे से ढक रखे थे और केवल उनका मुँह और आंखें झपक रही थीं। उसने यह भी बयान दिया कि अपने पति को बचाने के लिए वह उस पर गिर गई थी, जिसके कारण उसके हाथों की चूड़ियां टूट गई थीं, इसलिए उसे चोटें आई थीं और खून निकल आया था। जब वह अपने पति पर गिरी थी, तो अभियुक्त व्यक्तियों ने उसकी पीठ पर लाठियों से वार किया था, जिसके कारण उसे चोटें आई थीं और उसके कपड़ों पर भी खून आ गया था, लेकिन न तो टूटी हुई चूड़ियां और न ही अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना के खून से सने कपड़े बरामद किए गए हैं, जबकि उसने बयान दिया था कि उसने इसे निरीक्षक को दिया था और वे इसे ले गए थे, जबकि पहले उसने बयान दिया था कि सुबह वह सूचना देने के लिए माता-पिता के घर चली गई थी और वहीं रुक गई थी, इसलिए वह कम से कम उस समय उपस्थित नहीं रही होगी जब निरीक्षक सुबह आया था।

(46) अभिलेख के अनुशीलन से यह पता चलता है कि अभियोजन साक्षी-1-श्रीमती अगना की कोई चिकित्सीय परीक्षण रिपोर्ट नहीं है। यदि अभियोजन साक्षी-1 की चूड़ियां टूट गई थीं और यदि इतनी बड़ी संख्या में व्यक्तियों द्वारा उसकी पीठ पर लाठियों से वार किया गया था, तो उसे गंभीर चोटें आनी चाहिए थीं। उसने यह भी बयान दिया था कि पति की हत्या के बाद, वह अन्य मृतकों को देखने बाहर नहीं गई थी, जो कि एक सामान्य व्यक्ति का आचरण नहीं है, क्योंकि सामान्यतः ऐसी महिला मदद के लिए चिल्लाते हुए बाहर जाती। राम खेलावन की चोटें भी उसके साक्ष्य के अनुरूप नहीं थीं क्योंकि उसने बयान दिया कि उसके पति पर कुल्हाड़ी, लाठी और डंडे से वार किया गया था लेकिन लाठी और डंडे की कोई चोट नहीं थी। अभियोजन साक्षी-1 का उपरोक्त साक्ष्य दर्शाता है कि यह गवाह सच नहीं बोल रहा है। उसके साक्ष्य में

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



सारवान अंतर्विरोध हैं और उसका साक्ष्य न तो सुसंगत है और न ही विश्वसनीय है। इस प्रकार, या तो वह घटनास्थल पर उपस्थित नहीं थी या वह झूठ बोल रही है और सच छिपा रही है। विद्वान विचारण न्यायालय ने उसके साक्ष्य में अंतर्विरोधों पर विचार करने के बाद भी, बिना किसी आधार के और केवल इस आधार पर कि अधिवक्ताओं ने प्रतिपरीक्षा के नियमों और कानून का पालन नहीं किया है, यह निष्कर्ष दर्ज किया कि उसका साक्ष्य समग्र साक्ष्य में सुसंगत, पूरी तरह से स्वाभाविक और विश्वसनीय है, जो कि विधि की दृष्टि में पोषणीय नहीं है क्योंकि अंतर्विरोधों के प्रभाव पर विचार नहीं किया गया है, जिस पर हमने विचार किया है।

(47) अभियोजन साक्षी-3-अरविंद ने बयान दिया कि लगभग आठ महीने पहले की बात है, रात करीब 08:00-09:00 बजे वह भैंस को चारा दे रहा था। रामपाल, शंकर, मिश्रा उर्फ मिश्री लाल, pretensions शिव राम, शिव नाथ, देशा, इंद्रपाल, राम सिंह, बब्बुन, शिव कुमार, मनोज, राम कुमार, राम विलास, राम प्रकाश, पप्पू, मेवा लाल, मंसा राम और मंसा राम का पुत्र कुंजी, जो न्यायालय में उपस्थित थे, आए। वे सभी कट्टा, लाठी, कुल्हाड़ी और बंदूक से लैस थे। उसके दादा सरजू छप्पर के नीचे आग ताप रहे थे। रामपाल ने उसके दादा सरजू पर गोली चलाई, फिर उसका भाई चंद्रिका डर के मारे चिल्लाते हुए घर से बाहर भागा। 7-8 व्यक्तियों ने उसका पीछा किया और कुछ अभियुक्त व्यक्ति उसके घर में घुस गए। उसके पिता की हत्या गांव से कुछ दूरी पर घरे पर कर दी गई थी। जो अभियुक्त व्यक्ति उसके घर में घुसे थे, उन्होंने उसकी मां सताना और उसके चाचा मंगल की हत्या कर दी। इसके बाद अभियुक्त व्यक्ति टॉर्च की रोशनी में इधर-उधर ढूंढने लगे। वह घर के अंदर दक्षिणी हिस्से में छिपा हुआ था, हालांकि अभियुक्तों ने उसे ढूंढ लिया और उस पर कट्टे के कुंदे और कुल्हाड़ी से वार किया। उसे चोट आई। उस पर हमला करने के बाद अभियुक्त व्यक्तियों ने कहा "चलो राम खेलावन को मारने चलें" और यह कहकर वे राम खेलावन के घर की ओर चले गए। उसने आगे बयान दिया कि उसके घर के सामने छप्पर की छत के नीचे लालटेन जल रही थी और घर के अंदर भी चिराग (दीपक) जल रहा था। बाद में उसे पता चला कि अभियुक्त व्यक्तियों ने राम खेलावन की हत्या कर दी है। इसके बाद अभियुक्त व्यक्ति लौटे और उसकी मां की सोने की चेन, चांदी के झुमके और चार बटुए, चार बक्से आदि ले गए। उसने आगे बयान दिया कि उसकी चोटें डॉक्टर द्वारा नहीं देखी गईं। इसके बाद उसने बयान दिया कि वह उमा शंकर सरकारी अस्पताल, उन्नाव आया था, जहां उसकी चोटों का परीक्षण किया गया और वह उस अस्पताल में बीस दिनों तक भर्ती रहा। अस्पताल से लौटने के बाद पुलिस अधिकारी द्वारा उसका बयान दर्ज किया गया था।

(48) अभियोजन साक्षी-3-अरविंद के साक्ष्य से पता चलता है कि उसका भी 7-8 अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा पीछा किया गया था, जिन्होंने उसे पीटा था, जिसमें उसे गंभीर चोटें आईं और वह बेहोश हो गया। यह बहुत अजीब है कि परिवार के एक बच्चे को अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा पीटा गया, लेकिन रात भर उसे प्राथमिक उपचार देने का किसी की ओर से कोई प्रयास नहीं किया गया। यह भी बहुत अजीब है कि उक्त अभियुक्त व्यक्तियों ने, जिन्होंने परिवार के पांच व्यक्तियों की हत्या कर दी थी, अभियोजन साक्षी-3 को केवल पीटने के बाद छोड़ दिया और उसे उसके द्वारा दिखाए गए 7-8 व्यक्तियों द्वारा की गई पिटाई के अनुरूप चोटें भी नहीं आई थीं। अभियोजन साक्षी-3 का चिकित्सीय परीक्षण दिनांक 12.02.2021 को सुबह 09:00 बजे किया गया था। अभियोजन साक्षी-2 ने बयान दिया कि जब प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने के बाद वह निरीक्षक के साथ मौके पर वापस पहुंचा, तब पुलिस द्वारा अभियोजन साक्षी-3-अरविंद को जीप से चिकित्सीय परीक्षण के लिए भेजा गया था, हालांकि अभियोजन साक्षी-3 के चिकित्सीय परीक्षण के

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



संबंध में ऐसा कोई पत्र अभिलेख पर नहीं है। हालांकि, अभियोजन साक्षी-3 का चिकित्सीय परीक्षण इंगित करता है कि उसे कांस्टेबल द्वारा चिकित्सीय परीक्षण के लिए लाया गया था। अभियोजन साक्षी-3 ने अपने साक्ष्य में यह भी बयान दिया कि वह 20 दिनों तक अस्पताल में भर्ती रहा और अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद विवेचक द्वारा उसका बयान दर्ज किया गया था, जबकि अस्पताल में उसके भर्ती होने के संबंध में कोई रिपोर्ट नहीं है, जो यह इंगित कर सके कि वह उपरोक्त घटना के बाद अस्पताल में बीस दिनों तक भर्ती रहा था। इस प्रकार, ऐसा प्रतीत होता है कि अभियोजन साक्षी-3 ने भी सच नहीं बताया है। यह न्यायालय यह समझने में असमर्थ है कि अभियोजन साक्षी-3-अरविंद, जो घटना के समय लगभग 11 वर्ष का बच्चा था, उसे उन व्यक्तियों द्वारा जीवित छोड़ दिया गया होगा जिन्होंने ऐसा नरसंहार किया, जिसमें उन्होंने एक परिवार के पांच व्यक्तियों को मार डाला, लेकिन उसे उसके अनुरूप चोटें नहीं आई हैं। विद्वान विचारण न्यायालय ने उपरोक्त पहलू पर विचार किए बिना, अभियोजन साक्षी-1 और अभियोजन साक्षी-2 के संबंध में, इस गवाह के संबंध में भी उसका साक्ष्य स्वीकार करने के लिए वैसा ही निष्कर्ष दर्ज किया, इसलिए यह पोषणीय नहीं है।

(49) अपीलार्थियों की ओर से यह तर्क भी उठाया गया था कि यह बहुत अजीब है कि लगभग अठारह नामजद अभियुक्त व्यक्तियों और 7-8 अज्ञात अभियुक्त व्यक्तियों को इन तीनों अभियोजन गवाहों ने देखा और उन्होंने उन्हें रात के अंधेरे में पहचान लिया, जब प्रकाश का कोई स्रोत नहीं था। अज्ञात व्यक्तियों का भी पता नहीं लगाया जा सका और न ही उनके खिलाफ वाद दर्ज किया जा सका।

(50) अभियोजन साक्षी-2 और अभियोजन साक्षी-3 की उपरोक्त गवाही इंगित करती है कि घर के दरवाजे पर एक लालटेन थी और घर में अलग-अलग स्थानों पर दिए जल रहे थे, जो उनके छिपाने के स्थानों से इतनी बड़ी संख्या में हमलावरों को पहचानने के लिए पर्याप्त प्रतीत नहीं होता है। दरवाजे पर या उसके कमरे के अंदर प्रकाश के स्रोत के संबंध में अभियोजन साक्षी-1 के साक्ष्य में अंतर्विरोध है, जहां उसने इतनी बड़ी संख्या में व्यक्तियों को देखा था और उसके पति की हत्या अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा की गई थी।

(51) उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए, तथ्य के सभी तीनों गवाहों के साक्ष्य उनके साक्ष्य और उपस्थिति तथा अभियोजन के मामले के बारे में गंभीर संदेह पैदा करते हैं। अन्य गवाह औपचारिक गवाह हैं और मामला तथ्य के तीन गवाहों यानी अभियोजन साक्षी-1, अभियोजन साक्षी-2 और अभियोजन साक्षी-3 के चक्षुदर्शी साक्ष्य पर निर्भर करता है। इसलिए भले ही विवेचना, पोस्टमार्टम, नजरी नक्शा तैयार करने आदि में कोई ढिलाई रही हो, अभियोजन के मामले पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, यदि अभियोजन के समर्थन में चक्षुदर्शी साक्ष्य सुसंगत और अडिग है, लेकिन यदि घटनास्थल पर चश्मदीद गवाहों की उपस्थिति संदेहास्पद हो जाती है या इस आधार पर विश्वास योग्य भी नहीं रह जाती है कि वे घटना को उस तरीके से नहीं देख सकते थे जैसा कि उनके द्वारा वर्णन किया गया है, तो उस आधार पर दोषसिद्धि कायम नहीं रह सकती। वे परिवार के सदस्य भी हैं और कोई स्वतंत्र गवाह पेश नहीं किया गया है तथा उपर्युक्त गवाहों का साक्ष्य विश्वास पैदा नहीं करता है।

(52) अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य और सामग्री पर विचार करने पर, यह स्पष्ट है कि चश्मदीद गवाहों ने बयान दिया है कि अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा पैदा किए गए डर और आतंक के कारण कोई भी बाहर नहीं आया, जबकि प्रथम सूचना रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण आए थे और उन्होंने अभियुक्त व्यक्तियों को पहचाना था, लेकिन किसी को भी पेश नहीं किया गया है। यह सच है कि परिवार के सदस्य निर्दोष

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



व्यक्तियों को नहीं फंसाएंगे और वास्तविक दोषियों को नहीं छोड़ेंगे, लेकिन वर्तमान मामले में, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, पुरानी हत्याओं के कारण दुश्मनी के आधार पर फंसाया गया है, अन्यथा, प्रथम सूचना रिपोर्ट और अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य में इसे नहीं दिखाया गया होता, इसलिए, उक्त दुश्मनी को पुख्ता साक्ष्य के साथ साबित किया जाना चाहिए था, जिसे करने में अभियोजन विफल रहा है। शिकायतकर्ता, अभियोजन साक्षी-2 ने इस पर बहुत जोर दिया। उसने तदनुसार अभियुक्त व्यक्तियों के संबंधों का भी खुलासा किया लेकिन यह दिखाने में विफल रहा कि उक्त दुश्मनी अभी भी बनी हुई थी और 19 वर्ष पहले की उक्त घटना के कारण अभियुक्त व्यक्ति ऐसा नरसंहार कर सकते थे, जबकि उसने स्वीकार किया था कि अभियुक्त मेवालाल और प्रीतम तथा उसके पुत्रों से कोई दुश्मनी नहीं थी, लेकिन उन्हें भी फंसाया गया है। यह भी बहुत अजीब है कि यदि मेवालाल बिना किसी दुश्मनी के अभियुक्त व्यक्तियों का सह-अपराधी था, तब भी वह और अभियुक्तों में से एक राम विलास गांव के पास ही घर पर रुकेंगे क्योंकि अभियोजन साक्षी-2 के अनुसार, पुलिस ने निरीक्षक द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने के अगले ही दिन उन्हें गिरफ्तार कर लिया था, जब वह उसके साथ आया था, जबकि, विवेचक के अनुसार, वे कहीं और से गिरफ्तार किए गए थे, जब वे भागने वाले थे लेकिन उनसे कोई धन बरामद नहीं हुआ था। इस प्रकार, कम से कम दो अभियुक्त व्यक्तियों की गिरफ्तारी में बड़ा अंतर्विरोध है। अभियोजन पक्ष बरामदगी साबित करने और कारतूस आदि को अपराध से जोड़ने में भी विफल रहा है। उस स्थान पर आग का कोई साक्ष्य नहीं पाया गया है, जहां सरजू की हत्या की गई थी, जिससे वह आग ताप रहा होता।

(53) माननीय उच्चतम न्यायालय ने, हरिभाऊ और अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य (उपर्युक्त) के मामले में भारतीय दंड संहिता की धारा 149 के दायरे पर विचार किया है और संप्रेक्षण किया है कि "विधि-विरुद्ध जमाव के प्रत्येक सदस्य के लिए कोई विशिष्ट प्रकट कार्य करना आवश्यक नहीं है। एक बार जब सामान्य उद्देश्य में भागीदारी और उसे साझा करना साबित हो जाता है, तो प्रत्येक सदस्य उस उद्देश्य के अनुसरण में किए गए अपराधों के लिए प्रतिनिधिक रूप से उत्तरदायी हो जाता है।" इसी तरह का मत माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा लालजी और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (उपर्युक्त) और मसालती और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (उपर्युक्त) के मामलों में अपनाया गया था।

(54) माननीय उच्चतम न्यायालय ने, उत्तर प्रदेश राज्य बनाम नरेश और अन्य (उपर्युक्त) के मामले में यह अभिनिर्धारित किया है कि एक घायल गवाह के साक्ष्य को एक चिन्हित गवाह होने के नाते उचित महत्व दिया जाना चाहिए, इस प्रकार, उसकी उपस्थिति पर संदेह नहीं किया जा सकता है और घायल गवाह के साक्ष्य पर तब तक भरोसा किया जाना चाहिए जब तक कि उसमें बड़े अंतर्विरोधों और विसंगतियों के आधार पर उसके साक्ष्य को खारिज करने के आधार न हों। प्रासंगिक पैराग्राफ 23 और 25 आगे उद्धृत हैं:-

"23. उच्च न्यायालय ने बालक राम (अभियोजन साक्षी-5) पर अविश्वास किया है, जिसे बंदूक की गोली की चोटें आई थीं। पुख्ता कारण बताए बिना उच्च न्यायालय द्वारा उसके साक्ष्य को खारिज नहीं किया जा सकता था। मामूली बातों पर केवल अंतर्विरोध उसकी गवाही को अविश्वसनीय नहीं बना सकते।

एक घायल गवाह के साक्ष्य को एक चिन्हित गवाह होने के नाते उचित महत्व दिया जाना चाहिए, इस प्रकार, उसकी उपस्थिति पर संदेह नहीं किया जा सकता है। उसका बयान आमतौर पर बहुत विश्वसनीय माना जाता है और यह असंभाव्य है कि उसने किसी अन्य को झूठा फंसाने के लिए वास्तविक हमलावर को

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



छोड़ दिया हो। एक घायल गवाह की गवाही की अपनी प्रासंगिकता और प्रभावकारिता होती है क्योंकि उसे घटना के समय और स्थान पर चोटें आई हैं और यह उसकी गवाही को समर्थन देता है कि वह घटना के दौरान उपस्थित था। इस प्रकार, घायल गवाह की गवाही को कानून में एक विशेष दर्जा दिया गया है। गवाह केवल अपराध के लिए किसी तीसरे व्यक्ति को झूठा फंसाने के लिए अपने वास्तविक हमलावर को बिना दंड के जाने देना पसंद या चाहत नहीं रखेगा। इस प्रकार, घायल गवाह के साक्ष्य पर तब तक भरोसा किया जाना चाहिए जब तक कि उसमें बड़े अंतर्विरोधों और विसंगतियों के आधार पर उसके साक्ष्य को खारिज करने के आधार न हों। [विदेह: जरनैल सिंह बनाम पंजाब राज्य, (2009) 9 एससीसी 719; बालराजे उर्फ त्रिंबक बनाम महाराष्ट्र राज्य, (2010) 6 एससीसी 673; और अब्दुल सईद बनाम मध्य प्रदेश राज्य, (2010) 10 एससीसी 259]।"

25. सभी आपराधिक मामलों में, गवाहों की गवाही में सामान्य अवलोकन त्रुटियों के कारण सामान्य विसंगतियां होना स्वाभाविक है, अर्थात् समय बीतने के कारण स्मृति की त्रुटियां या मानसिक स्थिति जैसे घटना के समय सदमा और आतंक। जहां लोप अंतर्विरोध की सीमा तक हो जाता है, जिससे गवाह की सत्यता के बारे में गंभीर संदेह पैदा होता है और अन्य गवाह भी न्यायालय में गवाही देते समय सारवान सुधार करते हैं, ऐसे साक्ष्य पर भरोसा करना सुरक्षित नहीं हो सकता है। हालांकि, मामूली अंतर्विरोध, विसंगतियां, कल्पित विवरण या मामूली बातों पर सुधार जो अभियोजन के मामले के मूल भाग को प्रभावित नहीं करते हैं, उन्हें ऐसा आधार नहीं बनाया जाना चाहिए जिस पर साक्ष्य को उसकी संपूर्णता में खारिज किया जा सके। न्यायालय को गवाह की विश्वसनीयता के बारे में अपना मत बनाना होता है और यह निष्कर्ष दर्ज करना होता है कि क्या उसकी गवाही विश्वास पैदा करती है। 'अतिशयोक्ति स्वतः साक्ष्य को कमजोर नहीं करती है। लेकिन यह अभियोजन के संस्करण की विश्वसनीयता का परीक्षण करने के कारकों में से एक हो सकता है, जब संपूर्ण साक्ष्य को विश्वसनीयता की कसौटी पर परखने के लिए एक कूसिबल (परख नली) में रखा जाता है।'

इसलिए, एक गवाह के बयानों में केवल मामूली बदलावों को सुधार नहीं कहा जा सकता क्योंकि वे गवाह द्वारा पहले दिए गए बयान के विस्तृत विवरण हो सकते हैं। वे लोप जो सारवान विवरणों में अंतर्विरोध की सीमा तक जाते हैं अर्थात् मामले की जड़ तक जाते हैं/अभियोजन के मामले के विचारण या मूल भाग को भौतिक रूप से प्रभावित करते हैं, गवाह की गवाही को अविश्वसनीय बनाने योग्य बना देते हैं। [विदेह: पुलिस निरीक्षक द्वारा प्रतिनिधित्व राज्य बनाम सरवनन एवं अन्य, एआईआर 2009 एससी 152; अरुमुगम बनाम राज्य, एआईआर 2009 एससी 331; महेन्द्र प्रताप सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, (2009) 11 एससीसी 334; और डॉ. सुनील कुमार शंभूदयाल गुप्ता एवं अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य, जेटी 2010 (12) एससी 287]।"

(55) माननीय उच्चतम न्यायालय ने ओम पाल और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (अब उत्तराखंड राज्य) (उपर्युक्त) के मामले में चक्षुदर्शी साक्ष्य विवरण और घायल गवाह की गवाही पर विचार किया है। प्रासंगिक पैराग्राफ 33 और 35 आगे उद्धृत हैं:-

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



33. हमारे समक्ष वर्तमान मामला परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित नहीं है, बल्कि चक्षुदर्शी साक्ष्य पर आधारित है। इस न्यायालय ने बार-बार यह अभिनिर्धारित किया है कि चक्षुदर्शी साक्ष्य सबसे अच्छा साक्ष्य है जब तक कि उस पर संदेह करने के कारण न हों। इस न्यायालय ने शाहाजा उर्फ शाहजहाँ इस्माइल मोहम्मद शेख (उपर्युक्त) में इस प्रकार अभिनिर्धारित किया:

30. सीधे शब्दों में कहें तो, चश्मदीद गवाहों के साक्ष्य के मूल्य का आकलन करने में, दो मुख्य विचार यह हैं कि क्या, मामले की परिस्थितियों में, घटनास्थल पर या ऐसी स्थितियों में उनकी उपस्थिति पर विश्वास करना संभव है जिससे उनके लिए उन तथ्यों को देखना संभव हो सके जिनकी उन्होंने गवाही दी है और दूसरा, क्या उनके साक्ष्य में कुछ अंतर्निहित रूप से असंभाव्य या अविश्वसनीय है। इन दोनों विचारों के संबंध में, या तो उन गवाहों से स्वयं प्राप्त की गई परिस्थितियां या अन्य साक्ष्य द्वारा स्थापित परिस्थितियां जो उनकी उपस्थिति को असंभाव्य बनाती हैं या उनके बयानों की सत्यता को अविश्वसनीय बनाती हैं, उस मूल्य पर प्रभाव डालेंगी जो एक न्यायालय उनके साक्ष्य को देगा। हालांकि जिन मामलों में अभियुक्त का अभिवाक् केवल इनकार करना है, फिर भी अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य का परीक्षण उसके अपने गुण-दोष के आधार पर किया जाना चाहिए, जहां अभियुक्त एक निश्चित अभिवाक् उठाता है या एक सकारात्मक मामला प्रस्तुत करता है जो अभियोजन के मामले से असंगत है, अभियोजन पक्ष के साक्ष्य के मूल्य का आकलन करते समय इस तरह के अभिवाक् या मामले की प्रकृति और उसके संबंध में संभावनाओं को भी ध्यान में रखना होगा।

31. दोनों चश्मदीद गवाहों के साक्ष्य में ऐसा कुछ भी प्रत्यक्ष या स्पष्ट नहीं है जिसके आधार पर हम यह मत अपना सकें कि वे सच्चे या विश्वसनीय चश्मदीद गवाह नहीं हैं। यहाँ या वहाँ लोप के रूप में कुछ अंतर्विरोध चश्मदीद गवाहों के संपूर्ण साक्ष्य को खारिज करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।"

(बल दिया गया)

35. यह स्थापित है कि एक घायल चश्मदीद गवाह की गवाही को कानून में एक विशेष दर्जा दिया गया है। एक चिन्हित गवाह होने के नाते, उसकी उपस्थिति पर संदेह नहीं किया जा सकता है। एक घायल चश्मदीद गवाह की गवाही की अपनी प्रासंगिकता होती है क्योंकि उसे घटना के समय और स्थान पर चोटें आई हैं और यह उसकी गवाही को समर्थन देता है कि वह घटना के दौरान उपस्थित था। इस प्रकार, घायल चश्मदीद गवाह की गवाही को आम तौर पर उचित महत्व दिया जाना चाहिए जब तक कि उसमें स्पष्ट अंतर्विरोध न हों।"

(56) उपर्युक्त मामले में, यह भी अभिनिर्धारित किया गया है कि केवल हमले के हथियार की बरामदगी न होना अभियोजन के मामले के लिए घातक नहीं है जैसा कि वर्तमान मामले में रहा है, जहां हमले के हथियार की बरामदगी को अवैध पाया गया है, जिसमें अभियुक्त व्यक्तियों को आयुध अधिनियम की

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



धारा 3/25 के तहत अपराध के लिए बरी कर दिया गया है और इसे न तो राज्य द्वारा और न ही शिकायतकर्ता द्वारा चुनौती दी गई है।

(57) माननीय उच्चतम न्यायालय ने, दलीप सिंह और अन्य बनाम पंजाब राज्य (उपर्युक्त) के मामले में निकट संबंधियों के साक्ष्य की सत्यता के बारे में विचार किया है। पैराग्राफ-26 आगे उद्धृत है:-

26. हम उच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीशों से सहमत होने में असमर्थ हैं कि दो चश्मदीद गवाहों की गवाही के लिए संपुष्टि की आवश्यकता है। यदि इस तरह के संप्रेक्षण का आधार इस तथ्य पर आधारित है कि गवाह महिलाएं हैं और सात पुरुषों का भाग्य उनकी गवाही पर निर्भर करता है, तो हम ऐसे किसी नियम को नहीं जानते हैं। यदि यह इस कारण पर आधारित है कि वे मृतक से निकटता से संबंधित हैं तो हम सहमत होने में असमर्थ हैं। यह कई अपराधिक मामलों में आम भ्रांति है और जिसे इस न्यायालय की एक अन्य पीठ ने रामेश्वर बनाम राजस्थान राज्य: [1952] एस.सी.आर. 377 पृष्ठ 390 पर दूर करने का प्रयास किया था। हम पाते हैं, हालांकि, कि यह दुर्भाग्य से अभी भी बनी हुई है, यदि न्यायालयों के निर्णयों में नहीं, तो कम से कम अधिवक्ताओं के तर्कों में।"

(58) माननीय उच्चतम न्यायालय ने, बबन शंकर दफाल और अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य (उपर्युक्त) के मामले में भी हितबद्ध या संबद्ध गवाहों पर विचार किया। प्रासंगिक पैराग्राफ-28 और 29 आगे उद्धृत हैं:-

28. अपराधिक मामलों में, गवाहों की विश्वसनीयता, विशेष रूप से वे जो पीड़ित के करीबी रिश्तेदार हैं, की अक्सर संवीक्षा की जाती है। हालांकि, रिश्तेदार होने से कोई गवाह स्वतः 'हितबद्ध' या पक्षपाती नहीं हो जाता है। 'हितबद्ध' शब्द उन गवाहों को संदर्भित करता है जिनका परिणाम में व्यक्तिगत हित होता है, जैसे कि दुश्मनी या व्यक्तिगत लाभ के कारण बदला लेने या अभियुक्त को झूठा फंसाने की इच्छा। दूसरी ओर, एक 'संबद्ध' गवाह वह होता है जो स्वाभाविक रूप से अपराध के दृश्य पर उपस्थित हो सकता है, और उनकी गवाही को केवल पीड़ित के साथ उनके संबंध के कारण खारिज नहीं किया जाना चाहिए। न्यायालयों को उन्हें अविश्वसनीय करार देने के बजाय उनके बयानों की विश्वसनीयता, सुसंगतता और तार्किकता का आकलन करना चाहिए।

29. 'हितबद्ध' और 'संबद्ध' गवाहों के बीच अंतर को दलीप सिंह बनाम पंजाब राज्य; 1954 एससीआर 14 में स्पष्ट किया गया है, जहां इस न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया था कि एक करीबी रिश्तेदार आमतौर पर एक निर्दोष व्यक्ति को झूठा फंसाने वाला अंतिम व्यक्ति होता है। इसलिए, एक संबद्ध गवाह के साक्ष्य का मूल्यांकन करने में, न्यायालय को उनकी गवाही की सुसंगतता और विश्वसनीयता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि साक्ष्य को केवल पारिवारिक संबंधों के कारण खारिज नहीं किया जाता है, बल्कि इसके बजाय इसकी अंतर्निहित विश्वसनीयता और मामले में अन्य साक्ष्यों के साथ सुसंगतता के आधार पर आंका जाता है। इस स्थिति को इस न्यायालय द्वारा दोहराया गया है:

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



i. मो. रोजाली अली बनाम असम राज्य, गृह मंत्रालय सचिव के माध्यम से; (2019) 19 एससीसी 567

ii. गणपति बनाम तमिलनाडु राज्य; (2018) 5 एससीसी 549

iii. जयबालन बनाम पुडुचेरी संघ राज्यक्षेत्र; (2010) 1 एससीसी 199”

(59) माननीय उच्चतम न्यायालय ने नान्चे गौड़ा बनाम कर्नाटक राज्य अरकलगुड पुलिस के माध्यम से (उपर्युक्त) के मामले में यह अभिनिर्धारित किया है कि ऐसा कोई पूर्ण नियम नहीं है कि संबंध गवाहों के साक्ष्य की स्वतंत्र गवाहों के साक्ष्य से संपुष्टि की जानी ही चाहिए, लेकिन जब संबंध चश्मदीद गवाहों का साक्ष्य अविश्वसनीय और विश्वास योग्य नहीं पाया जाता है, तो कानूनन स्वतंत्र गवाहों का होना आवश्यक हो जाता है। प्रासंगिक पैराग्राफ 25 और 25-क आगे उद्धृत हैं:-

25. यह नोट किया जाना है कि सभी चश्मदीद गवाह रिश्तेदार थे और अभियोजन पक्ष दिन के उजाले में एक सार्वजनिक सड़क पर हुई घटना के लिए स्वतंत्र गवाहों का विश्वसनीय साक्ष्य प्रस्तुत करने में विफल रहा। यद्यपि ऐसा कोई पूर्ण नियम नहीं है कि संबंध गवाहों के साक्ष्य की स्वतंत्र गवाहों के साक्ष्य से संपुष्टि की जानी चाहिए, फिर भी जब संबंध चश्मदीद गवाहों का साक्ष्य अविश्वसनीय और विश्वास योग्य नहीं पाया जाता है, तो कानूनन स्वतंत्र गवाहों का होना आवश्यक हो जाता है। चश्मदीद गवाहों के साक्ष्य में मामूली बदलाव और अंतर्विरोध संदेह के लाभ को अभियुक्त के पक्ष में नहीं झुकाएंगे, लेकिन जब अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य में अंतर्विरोध अभियोजन के मामले के लिए घातक साबित होते हैं, तब वे अंतर्विरोध मामले की जड़ तक जाते हैं और ऐसे मामलों में अभियुक्त को संदेह का लाभ मिलता है।

25क. अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य की विश्वसनीयता पर विचार करना न्यायालय का कर्तव्य है। जैसा कि बेंथम द्वारा कहा गया है, "गवाह न्याय की आंखें और कान होते हैं"। वर्तमान तथ्यों में, हम महसूस करते हैं कि इन गवाहों का साक्ष्य विसंगतियों, अंतर्विरोधों और असंभाव्य विवरणों से भरा है जो हमें इस अपरिहार्य निष्कर्ष पर ले जाता है कि इन गवाहों का साक्ष्य अभियुक्त को दोषी ठहराने का आधार नहीं हो सकता।”

(60) हितबद्ध गवाहों के संबंध में इसी तरह का मत गंगाभवानी बनाम रायपति वेंकट रेड्डी और अन्य (उपर्युक्त), मो. जब्बार अली और अन्य बनाम असम राज्य (उपर्युक्त), पेरियासामी बनाम राज्य प्रतिनिधि पुलिस निरीक्षक के माध्यम से (उपर्युक्त) और सुच्चा सिंह और अन्य बनाम पंजाब राज्य (उपर्युक्त) के मामलों में अपनाया गया था, जिसमें यह भी अभिनिर्धारित किया गया है कि “संदेह के नियम के प्रति अत्यधिक निष्ठा से काल्पनिक संदेह या बने रहने वाले संशय को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए और इस तरह सामाजिक प्रतिरक्षा को नष्ट नहीं किया जाना चाहिए। इस दलील पर न्याय को निष्फल नहीं बनाया जा सकता कि एक निर्दोष को दंडित करने से बेहतर है कि सौ दोषी बच जाएं। दोषियों को छोड़ देना कानून के अनुसार न्याय करना नहीं है।”

(61) माननीय उच्चतम न्यायालय ने राम सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (उपर्युक्त) के मामले में यह अभिनिर्धारित किया है कि “जब सीधा चश्मदीद गवाह का विवरण मौजूद हो जो विश्वसनीय पाया जाता है, तो बैलिस्टिक रिपोर्ट प्राप्त करने में लोप और बैलिस्टिक विशेषज्ञ का परीक्षण न होना अभियोजन के मामले के लिए घातक नहीं हो सकता है, लेकिन यदि प्रस्तुत साक्ष्य, जिसमें चश्मदीद गवाहों का साक्ष्य भी

“अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



शामिल है, विश्वास पैदा नहीं करता है या सारवान गवाहों के परीक्षण के लोप के साथ-साथ स्पष्ट विसंगतियों से ग्रस्त है, तो बैलिस्टिक राय लेने में लोप और बैलिस्टिक विशेषज्ञ का परीक्षण अभियोजन के मामले के लिए घातक हो सकता है।”

(62) माननीय उच्चतम न्यायालय ने पृथ्वीराज जयंतीभाई वनोल बनाम दिनेश दयाभाई वाला और अन्य (उपर्युक्त) के मामले में यह अभिनिर्धारित किया है कि “चक्षुदर्शी साक्ष्य को सबसे अच्छा साक्ष्य माना जाता है जब तक कि उस पर संदेह करने के कारण न हों और केवल उसी मामले में जहां चिकित्सीय साक्ष्य और मौखिक साक्ष्य के बीच भारी अंतर्विरोध हो, और चिकित्सीय साक्ष्य चक्षुदर्शी गवाही को असंभाव्य बना देता है तथा चक्षुदर्शी साक्ष्य के सच होने की सभी संभावनाओं को खारिज कर देता है, चक्षुदर्शी साक्ष्य पर अविश्वास किया जा सकता है।”

(63) माननीय उच्चतम न्यायालय ने दिगंबर वैष्णव और अन्य बनाम छत्तीसगढ़ राज्य (उपर्युक्त) के मामले में यह अभिनिर्धारित किया है कि “यह भी भली-भांति स्थापित सिद्धांत है कि आपराधिक मामलों में, यदि मामले में प्रस्तुत साक्ष्य पर दो विचार संभव हैं, एक अभियुक्त के दोष से आबद्ध है और दूसरा उसकी बेगुनाही से, तो वह विचार जो अभियुक्त के अनुकूल हो, अपनाया जाना चाहिए। इस सिद्धांत की उन मामलों में विशेष प्रासंगिकता है जिनमें अभियुक्त के दोष को परिस्थितिजन्य साक्ष्य द्वारा स्थापित करने का प्रयास किया जाता है”। प्रासंगिक पैराग्राफ 15 और 19 आगे उद्धृत हैं:-

15. आपराधिक न्यायशास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों में से एक अकाट्य रूप से यह है कि सबूत का बोझ पूरी तरह से अभियोजन पक्ष पर होता है और सामान्य बोझ कभी नहीं बदलता है। अनुमानों और कयासों या संदेह के आधार पर कोई दोषसिद्धि नहीं हो सकती, चाहे वह कितना भी गंभीर क्यों न हो। मजबूत संदेह, मजबूत संयोग और गंभीर संदेह कानूनी सबूत का स्थान नहीं ले सकते। अभियोजन पक्ष के दायित्व को बहुत मजबूत संदेह और अभियुक्त को दोषी ठहराने वाले अत्यधिक संदेहास्पद कारकों के अस्तित्व का हवाला देकर पूरा नहीं किया जा सकता है, और न ही प्रतिरक्षा की असत्यता उस सबूत का स्थान ले सकती है जिसे अभियोजन को सफल होने के लिए स्थापित करना है, हालांकि प्रतिरक्षा द्वारा एक झूठा अभिवाक् अधिक से अधिक एक अतिरिक्त परिस्थिति माना जा सकता है, यदि अन्य परिस्थितियां अचूक रूप से दोष की ओर इशारा करती हैं।”

19. यह भी भली-भांति स्थापित सिद्धांत है कि आपराधिक मामलों में, यदि मामले में प्रस्तुत साक्ष्य पर दो विचार संभव हैं, एक अभियुक्त के दोष से आबद्ध है और दूसरा उसकी बेगुनाही से, तो वह विचार जो अभियुक्त के अनुकूल हो, अपनाया जाना चाहिए। इस सिद्धांत की उन मामलों में विशेष प्रासंगिकता है जिनमें अभियुक्त के दोष को परिस्थितिजन्य साक्ष्य द्वारा स्थापित करने का प्रयास किया जाता है [देखें काली राम बनाम हिमाचल प्रदेश राज्य, (1973) 2 एससीसी 808]।”

(64) माननीय उच्चतम न्यायालय ने रावसाहेब और अन्य बनाम कर्नाटक राज्य (उपर्युक्त) के मामले में यह संप्रेक्षण किया है कि “यह कहा गया है कि यह गवाहों की गुणवत्ता है न कि संख्या जो मायने रखती है”। माननीय उच्चतम न्यायालय ने आपराधिक मामलों पर विचार करने के लिए आवश्यक सिद्धांतों को आगे सूचीबद्ध किया है। “निकट संबंधी की गवाही” के संबंध में, माननीय उच्चतम न्यायालय ने पैराग्राफ-17.4 में संप्रेक्षण किया है कि “एक गवाह का निकट संबंधी होना उसकी गवाही को खारिज करने का पर्याप्त आधार नहीं है। एक 'पक्षपाती' या 'हितबद्ध' गवाह को भी यंत्रवत खारिज करने से न्याय की अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



विफलता हो सकती है। 'एक बात में झूठा, सब बातों में झूठा' का सिद्धांत सामान्य अनुप्रयोग का नियम नहीं है। "संभावनाओं की प्रबलता" के संबंध में, माननीय उच्चतम न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया है कि "किसी व्यक्ति को विचारों के द्वैत से उत्पन्न होने वाले संदेह के लाभ का हकदार बनाने के लिए, अभियुक्त के पक्ष में संभव विचार उसके विरुद्ध विचार के लगभग उतना ही यथोचित रूप से संभावित होना चाहिए"।

(65) माननीय उच्चतम न्यायालय ने तहसीलदार सिंह और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (उपर्युक्त) के मामले में प्रतिपरीक्षा के बारे में विचार किया है, जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के अंतर्गत वर्तमान वाद में बहुत अधिक प्रासंगिक नहीं है।

(66) वर्तमान वाद के तथ्यों और विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा पारित निर्णय की ओर रुख करते हुए, हम पाते हैं कि विद्वान विचारण न्यायालय ने झूठे फंसाने के संबंध में तथ्यों और तर्कों को दर्ज करने के बाद, यह निष्कर्ष दर्ज किया है कि अभियुक्त के विद्वान अधिवक्ता के तर्कों में कोई बल नहीं है कि घटना किसी अन्य व्यक्तियों द्वारा कारित की गई थी। यह निष्कर्ष इसके समर्थन में बिना किसी कारण या स्वतंत्र निष्कर्ष के दर्ज किया गया है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि विद्वान विचारण न्यायालय ने इसके बाद इस धारणा के आधार पर कार्यवाही की कि घटना केवल अपीलार्थियों द्वारा ही कारित की गई है। एक बार जब न्यायालय इस संबंध में सुस्पष्ट निष्कर्ष दर्ज करने के बाद इस धारणा पर आगे बढ़ता है, तो वह निश्चित रूप से किसी न किसी कारण से बेगुनाही से संबंधित तर्कों की अनदेखी करेगा या उन्हें खारिज कर देगा, क्योंकि न्यायालय को बिना साक्ष्य का परीक्षण किए शुरुआत में दर्ज की गई घटना में अभियुक्त व्यक्तियों की संलिप्तता के अपने निष्कर्ष को सही ठहराना होगा। ऐसी परिस्थितियों में, आक्षेपित निर्णय और आदेश केवल इसी आधार पर दूषित हो जाता है।

(67) हम यह भी पाते हैं कि विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा निष्कर्ष धारणा और अनुमान के आधार पर दर्ज किए गए हैं। प्रकाश के स्रोत के संबंध में, विद्वान विचारण न्यायालय ने दर्ज किया है कि घटना रात 08:00-09:00 बजे के बीच की है और यह मान लेना हास्यास्पद होगा कि यदि घरों में लालटेन, चिराग, दीया या डिबरी का प्रकाश नहीं होगा, तो प्रकाश का कोई स्रोत नहीं होगा। यह आगे दर्ज किया गया है कि घर में लालटेन जल रही थी। यह किसी भी कोण से अस्वाभाविक नहीं है और इसके अलावा गवाह घटना से पहले से ही अभियुक्त व्यक्तियों को जानते और पहचानते थे, इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि अभियुक्त व्यक्तियों का नाम लेने में कोई गलती होगी लेकिन विद्वान विचारण न्यायालय यह विचार करने में विफल रहा कि प्रकाश का स्रोत और जिस तरीके से गवाहों ने अभियुक्त व्यक्तियों को पहचानने की बात कही है, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, यह निष्कर्ष दर्ज करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि अभियुक्त व्यक्तियों/अपीलार्थियों को गवाहों द्वारा पहचाना जा सकता था और ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है कि वे उन्हें पहले से जानते थे। भले ही वे उन्हें पहले से जानते थे, इस न्यायालय का यह मत है कि वे ऐसे प्रकाश और प्रकाश का स्रोत जहां से आ रहा था, उसमें नहीं पहचाने जा सकते थे, जब उन्होंने अपने चेहरे भी ढक रखे थे और अभियोजन साक्षी-2 तथा अभियोजन साक्षी-3, जो छिपे हुए थे, वे भी अपने छिपने के स्थान से अलग-अलग स्थानों और अलग-अलग घरों में कारित घटना को नहीं देख सकते थे। अभियोजन साक्षी-1

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



ने प्रकाश के स्रोत के संबंध में विरोधाभासी बयान दिया है, जिसमें अभियुक्त व्यक्तियों की पहचान संदेहास्पद है। अन्यथा भी, यदि विद्वान विचारण न्यायालय के निष्कर्ष को सही मान लिया जाए और अभियुक्त व्यक्ति गवाहों के लिए पहले से परिचित थे, तो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में झूठे फंसाने के मामले से इनकार नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार, इस न्यायालय का यह मत है कि विद्वान विचारण न्यायालय साक्ष्य पर उचित रूप से विचार और मूल्यांकन करने में विफल रहा और उसने अपीलार्थियों को केवल इसलिए दोषी ठहराने के निष्कर्ष दर्ज किए क्योंकि यह पांच हत्याओं का मामला था और अपीलार्थी नामजद थे।

(68) यह भी देखा गया है कि तीन अभियुक्त व्यक्तियों, मंसा राम, पप्पू और कुंजी राम का नाम प्रथम सूचना रिपोर्ट में नहीं था, लेकिन उनके खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया गया था, परंतु, विद्वान विचारण न्यायालय ने उन्हें इस आधार पर बरी कर दिया कि चूंकि उनका नाम प्रथम सूचना रिपोर्ट में नहीं था, लेकिन उनके खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया गया था, इसलिए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता, भले ही गवाहों ने उनके खिलाफ साक्ष्य दिया हो, क्योंकि भले ही ऐसे अभियुक्त व्यक्तियों की संलिप्तता की कल्पना गुप्त तरीके से की जा सकती है, लेकिन उन्हें दोषी ठहराना सुरक्षित नहीं होगा और वे संदेह के लाभ के हकदार हैं। यदि विद्वान विचारण न्यायालय के इस निष्कर्ष को सही मान लिया जाए, तो केवल इसलिए कि अपीलार्थी, जिनका नाम प्रथम सूचना रिपोर्ट में था, उन्हें भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता था और वे संदेह के लाभ के हकदार होंगे, क्योंकि यदि साक्ष्य के उसी समूह पर, कुछ व्यक्तियों को केवल इसलिए बरी किया जा सकता है क्योंकि वे नामजद नहीं थे, तो नामजद अभियुक्त व्यक्तियों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। हालांकि, दूषित विवेचना और विवेचना एजेंसी की ओर से ढिलाई के कारण, वास्तविक दोषियों के खिलाफ वाद दर्ज नहीं किया जा सका।

(69) उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए और मामले के समग्र तथ्यों और परिस्थितियों पर विचार करते हुए, इस न्यायालय का यह मत है कि विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए निष्कर्ष विधि की दृष्टि में पोषणीय नहीं हैं और अपीलार्थी भी संदेह के लाभ के हकदार हैं तथा विचारण न्यायालय द्वारा पारित आक्षेपित निर्णय और आदेश अपास्त किए जाने योग्य हैं एवं अपीलार्थी बरी किए जाने के हकदार हैं।

(70) अपीलें सफल होती हैं और मंजूर की जाती हैं। विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा पारित दोषसिद्धि और सजा का आक्षेपित निर्णय और आदेश दिनांक 18 दिसंबर, 2004 एतद्वारा अपास्त किया जाता है। अपीलार्थी बरी किए जाते हैं। उन्हें तत्काल रिहा कर दिया जाएगा, जब तक कि किसी अन्य मामले के संबंध में उन्हें हिरासत में रखना आवश्यक न हो।

(71) इस आदेश की एक प्रति के साथ-साथ विचारण न्यायालय का अभिलेख तत्काल और किसी भी स्थिति में आज से दस दिनों के भीतर संबंधित न्यायालय को सूचना और अनुपालन के लिए प्रेषित किया जाए।

(जफ़ीर अहमद, न्यायमूर्ति) (रजनीश कुमार, न्यायमूर्ति)

फरवरी 27, 2026
अजीत

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"